Toppersnotes
Unleash the topper in you

RAILWAY

NTPC

CBT - II

Railway Recruitment Board

भाग – 1

सामान्य अध्ययन

SIERRA INNOVATIONS

NTPC

CONTENTS

भारतीय इतिहास

प्राचीन इतिहास

1.	प्रागैतिहासिक काल	1
2.	सिन्धु घाटी सभ्यता	2
3.	वैदिक सभ्यता	6
4.	बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म	10
5.	महाजनपद काल	12
6.	मौर्य काल	14
7.	मौर्योत्तर काल	16
8.	गुप्त काल	22
9.	गुप्तोत्तर काल	19

मध्यकालीन भारत

10.	भारत पर मुस्लिम आक्रमण	22
11.	सल्तनत काल	22
12.	मुगल काल	27
13.	भक्ति एवं सूफी आन्दोलन	33
14.	मराठा उदभव	35

आधुनिक भारत का इतिहास

15.	भारत में यूरोपीयन कम्पनियों का आगमन	36
16.	बंगाल और अंग्रेज	38
17.	मराठा शक्ति का उत्कर्ष	38
18.	अंग्रेजों की भू–राजस्व नीतियाँ	40
19.	आंग्ल–मैसूर संघर्ष	41
20.	आंग्ल–सिक्ख संघर्ष	42

21.	1857 की क्रांति	43
22.	गवर्नर जनरल	44
23.	भारत के वायरराय	46
24.	धर्म एवं समाज सुधार आन्दोलन	49
25.	राष्ट्रीय आन्दोलन	51
26.	गाँधी युग	54
27.	भारत में क्रान्तिकारी संगठन	61
	भारतीय संविधान	
28.	संविधान का विकास	64
29.	संविधान की पृष्ठभूमि	65
30.	संविधान के भाग	67
31.	अनुसूचियां	79
32.	प्रस्तावना	80
33.	संघ	81
35.	संसदीय समितियाँ	90
36.	न्यायपालिका	91
37.	राज्य	93
	भारतीय भूगोल	
38.	भारत की स्थिति एवं विस्तार	108
39.	भारत के भौगोलिक भू–भाग	110
40.	भारत का अपवाह तंत्र	116
41.	जैव–विविधता एवं संरक्षण	121
42.	भारत की मृदा	127
43.	जलवायु	129
44.	भारत में खनिज	130
45.	भारत के प्रमुख उद्योग	133
46.	भारत में परिवहन	136

47. भारत में कृषि 140
48. भारत की जनजातियाँ 143
49. ब्रह्मांड एवं सौरमण्डल 144
50. सामाजिक एवं सांस्कृतिक भूगोल 161
51. विश्व के महाद्वीप 162
52. प्रमुख व्यक्ति एवं उनके उपनाम 165
53. भारत के प्रमुख स्थल एवं उनके निर्माणकर्ता 166
54. प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय संगठन, स्थापना एवं मुख्यालय 167
55. विश्व का सामान्य अध्ययन 168

अर्थव्यवस्था

56. अर्थव्यवस्था एवं इसके क्षेत्र 215
57. राष्ट्रीय आय 217
58. मुद्रास्फीति 218
59. बैंकिंग 221
60. वित्तीय समावेशन 225
61. राजकोषीय नीति एवं बजट 228
62. कर एवं जीएसटी 231
63. व्यापार नीति एवं **FDI** 233
64. विनिमय दर 235
65. अन्तर्राष्ट्रीय संगठन 236
66. वित्त आयोग, **PDS**, एवं **MSP** 240
67. सब्सिडी एवं ई–कॉमर्स 241
68. बेरोजगारी एवं गरीबी 242
69. आर्थिक विकास 244
70. पंचवर्षीय योजनायें 245
71. अन्य महत्वपूर्ण तथ्य 248

प्राचीन इतिहास

- इतिहास शब्द ग्रीक अथवा यूनानी भाषा के शब्द हिस्टोरिया से बना है जिसका अर्थ होता है खोज अथवा छानबीन ।
- इतिहास का संबंध अतीत की उन घटनाओं से है जिनका हमारे पास लिखित एवं प्रमाणित तिथि उपलब्ध है ।
- ग्रीका विद्वान हैरोडोट्स ने इतिहास की प्रथम पुस्तक "हिस्टोरिका" लिखी ।
- हैरोडोट्स को इतिहास का पिता कहा जाता है ।
- इतिहास को जानने के लिए निम्न स्त्रोत है ।
  1. पुरातात्विक स्त्रोत
  2. साहित्य स्त्रोत
  3. विदेशी यात्रियों का यात्रा वृतांत

अध्ययन की दृष्टि से भारतीय इतिहास को हम निम्न प्रकार बांट सकते है ।

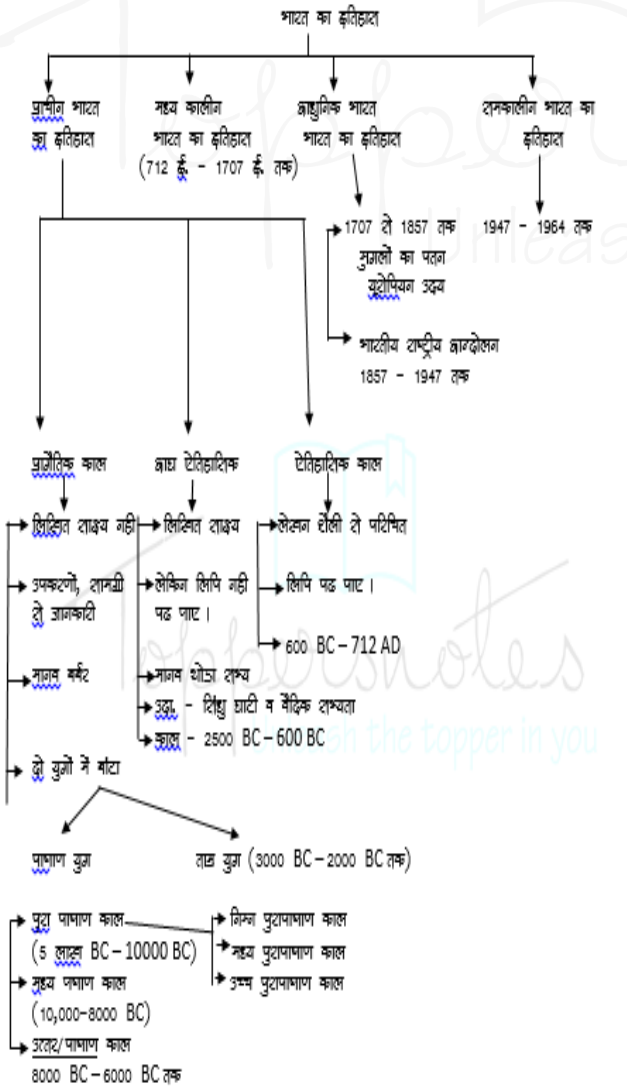

पुरापाषाण काल –

- आधुनिक मानव होमो सैपिनियंस का उदय ।
- मानव आग जलाना ।
- इस काल में चापर – चौपिंग संस्कृति का उदय, डी एन वाडिया ने खोज की , यह उत्तर भारतीय संस्कृति है ।
- दक्षिण भारत की संस्कृति हैण्ड – एक्स संस्कृति है इसकी खोज रॉबर्ट ब्रुस फुट ने की ।
- चापर–चौपिंग एवं हैण्ड डैस संस्कृति (उत्तर एवं दक्षिण) मिलन स्थल चौंतरान (जम्मू कश्मीर) है ।

प्रमुख स्थल –

भीम बेटका – शैला शील चित्रों के प्रसिद्ध;
डीडवाना (राजस्थान); हथनौरा

मध्य पाषाण काल

- इस काल को माइक्रोलिथ काल कहते है । छोटे – छोटे पाषाण उपकरणों के कारण ।
- भारत में इस काल का जनक HCL क्लाईल ।
- मानव न इस काल में सर्वप्रथम पशु पालन करना सीखा ।
- पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य है । बागौर (राजस्थान) एवं आदमगढ (MP)
- मध्य पाषाण काल का सबसे प्राचीन स्थल सराय नाहर यूपी है ।

उत्तर/नव पाषाण काल

- सर जॉन लुबाक ने नव पाषाण काल शब्द दिया ।
- गार्डन चाइल्ड ने इस काल को "नव पाषाणिक क्रांति" कहा ।
- ली मैंसियर ने उत्तर भारत में नव पाषाणिक उपकरण खोजे ।
- नेविलियन फ्रेंजर ने दक्षिण भारत से नव पाषाणिक उपकरण खोजे ।
- मानव ने कृषि करना सीखा ।
- वृहद पैमाने पर पशुपालन एवं ग्रामीण संस्कृति के साक्ष्य मिले ।

प्रमुख स्थल –

1. मेहरगढ (पाक) – नव पाषाण काल का सबसे प्राचीन स्थल
   8000 BC पूर्व कृषि के साथ साक्ष्य मिले ।
2. कोल्डी हवा – (यूपी) – 6000 वर्ष पूर्व चावल की खेती के साक्ष्य मिले ।
3. बृजहोम एवं गुफ्फकराल (J&K) बृजहोम से मानव के साथ कुत्ते को दफनाने के साक्ष्य भी मिले है ।

नोट –
प्रागऐतिहासिक काल के जनक भारत में डा. प्राइम रोज थे । जिन्होने लिंगसुमुर (कर्नाटक) से पाषाण कालीन उपकरण खोजे थे । नव पाषाण काल में दक्षिण भारत की प्रमुख फसल रागी थी ।

सिन्धु घाटी सभ्यता

परिचय

हडप्पा सभ्यता

- चार्ल्स मेसन – 1826 ई. सबसे पहले सभ्यता की ओर ध्यान आकर्षित किया ।
- जॉन ब्रंटन व विलियम ब्रंटन – 1856 ई हडप्पा नगर का सर्वे किया ।
- कनिघम इस ओर ध्यान दिलाया कनिघम को भारतीय पुरातात्विक विभाग का पितामह कहा जाता है ।
- 1921 में सर जॉन मार्शल के निर्देशन में दयाराम साहनी ने इसका उत्खनन किया ।
- सर्वप्रथम इस स्थल की खोज होने के कारण यह स्थल हडप्पा सभ्यता कहलाया ।

अन्य नाम

सिंधु घाटी सभ्यता
सरस्वती नदी घाटी सभ्यता
कांस्य युगीन सभ्यता
नगरीय सभ्यता

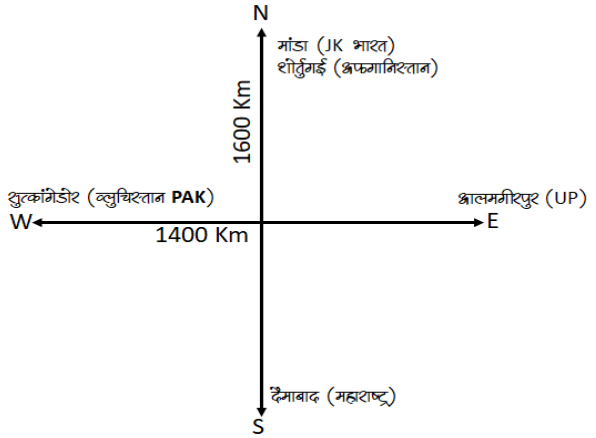

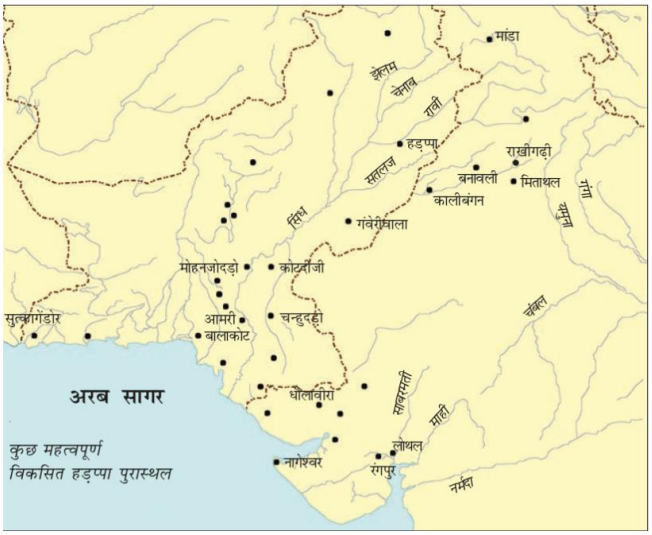

1300 किमी समुद्री सीमा

नोट –

- अफगानिस्तान में सिंधु घाटी सभ्यता के मात्र दो स्थल थे । शार्तगोई एवं मुंडीगॉक है ।
- शार्तगोई से नहरों द्वारा सिंचाई के साक्ष्य मिले है
- सिंधु घाटी सभ्यता मिश्र एवं मेसोपोटामिया की सभ्यता से 12 गुना बडी थी । जबकि मिश्र की सभ्यता से 20 गुना बडी थी ।
- आजादी से पूर्व खोजे समस्त स्थल पाकिस्तान में चले गये । भारत में केवल दो स्थल रहे, रंगपुर (गुजरात) और कोटला निहंगखां (रोपड पंजाब)
- भारत का सबसे बडा स्थल राखी गढ (हरियाणा) है, दूसरा बडा स्थल धौला वीरा (गुजरात) है ।
- पिग्गट ने हडप्पा एवं मोहनजोदडो को सिन्धु सभ्यता की जुँडवा राजधानी बताया है ।
- बडे नगर (पाकिस्तान)
  गनेडीवाल
  हडप्पा
  मोहनजोदडों

कालक्रम –

जॉन मार्शल – 3250 BC – 2750BC
माधोस्वरूप वत्स – 3500 BC – 2700 BC
रेडियो कार्बन पद्धति – 2300 BC – 1750 BC
एनसीआरटी – 2500 BC – 1750 BC
फेयर सर्विस – 2000 BC – 1500 BC
अर्नेस्ट मैके – 2800 BC – 2500 BC

निवासी –

यहां से प्राप्त कंकालों के आधार पर चार प्रजातियों में बांटा जा सकता है ।

1. भूमध्य सागरीय
2. अल्पाईन
3. मंगोलायड
4. प्रोटो आस्ट्रालायड

सर्वाधिक प्रजाति भूमध्य सागरीय प्रजाति मिली है ।

नगर नियोजन –

- नगर दो भागों में विभाजित – पश्चिमी भाग एवं पूर्वी भाग । पश्चिमी भाग दुर्ग था, पूर्वी भाग सामान्य नगर था ।
- पश्चिमी भाग में प्रशासनिक लोग रहते थे । तथापूर्वी भाग में जनसामान्य लोग रहते थे ।
- सिंधु घाटी सभ्यता में पक्की ईंटों के मकान है ।
- सिन्धु घाटी के समकालीन सभ्यताओ मे इस विशेषता का अभाव ।
- नगर परकोटे युक्त होते थे ।
- घरों के दरवाजे मुख्य सडक की तरफ न खुलकर पीछे की तरफ खुलते थे । केवल लोथल में मुख्य सडक की तरफ घरों के दरवाजे खुलते थे ।
- कालीबंगा दोहरे परकोटे युक्त है । जबकि चन्हुदडो में कोई परकोटा नही ।
- धोलाबीरा तीन भागों में विभक्त है । पश्चिमी, पूर्वी एवं मध्यमा ।
- लोथल एवं सुरकोटडा का पश्चिमी एवं पूर्वी भाग दोनो ही एक ही परकोटे से घिरे हुए है ।
- नगर ग्रिड पद्धति पर आधारित थे अर्थात शतरंज के बोर्ड की तरह सभी नगरों को बसाया था । सभी मार्ग समकोण पर काटते थे ।
- सबसे चौडी सडक 10 मीटर (मोहनजोदडो) की मिलती है जो सम्भवतः राजमार्ग रहा होगा ।
- घरो मे उत्कृष्ट नाली व्यवस्था (जल निकासी हेतु)
- बडी नालियो को ढक कर रखते थे ।
- भवन के अन्दर सामान्यतः 3 या 4 कक्ष, रसोईघर, 1 विद्यालय स्नानागार एवं कुआं होता था ।
  कच्ची एवं पक्की ईंटो का प्रयोग करते थे ।
  ईंट का आकार – 1 : 2 : 4
  जल निकासी हेतु पक्की ईंटों की नालियां होती थी विश्व की किसी अन्य सभ्यता में पक्की नालियों के साक्ष्य नही मिलते थे ।

प्रमुख नगर

1. हडप्पा: –

पाकिस्तान के पंजाब के मोंटगोमरी जिले मे स्थित (अब – शाहीवाल जिले मे) रावी नदी के तट पर

- उत्खननकर्ता – दयाराम साहनी
- रावी नदी के तट पर श्रमिको के आवास एवं अन्नागार मिलते है ।
- R – 37 नामक कब्रिस्तान मिलता है । एक शव को ताबूत मे दफनाया गया है, इसे विदेशी की कब्र कहते है ।
- टीले पर निर्मित – व्हीलर ने "माउण्ट A – B" कहा
- शंख का बना बैल 18 वर्ताकार चबूतरे मिले है ।
- यहां से सर्वाधिक अभिलेख युक्त मुहरें मिली है ।
- 6 – 6 की पंक्ति में कुल 12 कमरों वाला आवास स्थल मिला है ।
- एक स्त्री के गर्भ से निकलता हुआ पौधा की मृणमूर्ति मिली है । सम्भवतः उर्वरता की देवी होगी ।

2. मोहनजोदडो : –

स्थिति = लरकाना (सिन्ध, PAK)
सिन्धु नदी के तट पर
उत्खननकर्ता = राखालदास बनर्जी
मोहनजोदडो का शाब्दिक अर्थ = मृतकों का टीला (सिन्धी भाषा)

(i) विशाल स्नानागार –
  (a) 11.88 × 7.01 × 2.43 मीटर
  (b) सम्भवतया यहाँ धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया जाता रहा होगा ?
  (c) सर जॉन मार्शल ने इसे तात्कालिक समय की आश्चर्यजनक इमारत कहा है ।

(ii) विशाल अन्नागार सिंधु सभ्यता की सबसे बडी इमारत है । ल. 45.71×15.23 मीटर चौडी है ।

(iii) महाविद्यालय के साक्ष्य

(iv) सूती कपडे के साक्ष्य

(V) हाथी का कपालखण्ड

(vi) कांसा की नर्तकी की मूर्ति मिली है ।

(vii) पुरोहित राजा की मूर्ति जो ध्यान की अवस्था में है
  (a) इसने शॉल ओढ रखी है जिस पर कशीदाकारी का कार्य किया गया है ।

(viii) यहाँ से मेसोपोटामिया की मुहर मिलती है ।

(ix) योगी की मूर्ति मिली है ।

(x) आद्य शिव की मूर्ति मिली है ।

(xi) बांध से पतन के साक्ष्य मिलते है ।

(xii) सर्वाधिक मुहरें सिंधु घाटी सभ्यता के यहां मिलती है ।

3. लोथल :-

स्थिति = गुजरात

- भोगवा नदी के किनारे

उत्खननकर्ता = S. R. राव (रंगनाथ राव)

→ यह एक व्यापारिक नगर था ।

(i) यहाँ से गोदीवाडा (Dockyard) मिलता है
  (a) यह सिन्धु घाटी सभ्यता की सबसे बडी कृति है ।
(ii) मनके (Bead) बनाने का कारखाना
(iii) चावल के साक्ष्य
(iv) फारस की मुहर जो गोलाकार बटनुमा है
(v) घोडे की मृण्मूर्तियाँ
(vi) चक्की के दो पाट
(vii) घरों के दरवाजे मुख्य मार्ग पर खुलते हैं (एकमात्र)
(viii) छोटे दिशा सूचक यंत्र

4. सुरकोटडा / सुरकोटदा: -

स्थिति = गुजरात

(i) घोडे की हड्डियाँ

- सिन्धु घाटी सभ्यता के लोगो को घोडे का ज्ञान नहीं था ।

5. रोजदी (गुजरात)

- हाथी के साक्ष्य

6. रोपड (**PB**)

मनुष्य के साथ कुत्ते को दफनाने के साक्ष्य

7. धौलावीरा

गुजरात - कच्छ जिला (किसी नदी तट पर नहीं)

उत्खननकर्ता - रविन्द्र सिंह विष्ट (1990 में)

- यह सबसे नवीन नगर है जिसका उत्खनन किया गया
- कृत्रिम जलाशय के साक्ष्य । संभवतः नहरों के माध्यम से खेती करते होंगे । (दुर्गाभाग, मध्यम नगर, निचला)
- यह नगर 3 भागों में बंटा हुआ था ।
- स्टेडियम एवं सूचना पट्ट के अवशेष मिलते हैं (खेल का मैदान)

8. चन्हुदडों

उत्खननकर्त्ता - एन. मजूमदार (डाकूओं ने हत्या कर दी) - अर्नेस्ट मैके

- मनके बनाने के कारखाने (मणिकारी), मुहर बनाने का काम आदि ।
- औद्योगिक नगर
- झाकर एवं झुकर संस्कृति के साक्ष्य मिलते है ।
- कुत्ते द्वारा बिल्ली का पीछा करने के पद चिन्ह है ।
- एक सौन्दर्य पेटिका मिली है । जिसमें एक लिपिस्टिक है ।

कालीबंगा:-

अवस्थिति- हनुमानगढ
नदी-घग्घर/सरस्वती/दृषद्धती/चौतांग
उत्खननकर्ता- अमलानन्द घोष (1952)अन्य सहयोगी- बी. बी. लाल बी. के. थापर जे. पी. जोशी एम. डी. खरे
शाब्दिक अर्थ- काली चुडिया (पंजाबी भाषा का शब्द)
उपनाम- दीन हीन बस्ती- कच्ची ईटों के मकान ।

सामग्री:-

- सात अग्नि वेदिकाएँ एवं हवन कुण्ड मिले है,
- युग्मित शवाधान प्राप्त हुए ।
- एक मानव कपाल खण्ड मिला है, जिसे मस्तिष्क शो घन बीमारी तथा शल्य चिकित्सा की जानकारी मिलती है ।
- जूते हुए खेत के साक्ष्य मिलते है (एकमात्र स्थान) एक साथ दो फसले, उगाया करते थे, जौ एवं सरसों
- मकान कच्ची ईटों के थे बल्लियो की छत होती थी
- जल निकाली हेतु लकडी की नालियों के साक्ष्य मिले है अर्थात सुदृढ जल निकासी व्यवस्था नही थी ।
- ईटों को धूप से पकाया जाता था ।
- वृताकार चबूतरे एवं बेलनाकार मुद्रे (मैसोपोटामिया) मिली है ।
- लाल रंग के मिट्टी के बर्तन मिले है जिन पर काली एवं सफेद रंग की रेखाएँ खीची गई है ।
- यहां से एक खिलौना गाडी एवं पंख फैलाए बगुले की मूर्ति मिली है।
- यहां से ऊँट के अस्थि अवशेष मिले है।
- यहां का नगर अन्य हडप्पा स्थलों की तरह ही है, लेकिन यहां गढी एवं नगर दोनों दोहरे परकोटे युक्त है।
- यहां उत्खनन में पांच स्तर प्राप्त हुए है प्रथम दो स्तर प्राक हडप्पा कालीन है । अन्य तीन स्तर समकालीन हडप्पा है ।

मध्यकालीन भारत

भारत पर अरब आक्रमण

712 AD मे मोहम्मद बिन कासिम ने सिंध के राजा दाहिर सेन को हराया। दाहिर एवं उसका पुत्र जयसिंह लडते हुए मारे गए; भारत पर प्रथम मुस्लिम एवं प्रथम अरब आक्रमणकारी था

- रावर के युद्ध में बौद्ध भिक्षुओं ने कासिम की मदद की।
- कासिम ने पहली बार सिन्ध में 'जजिया कर' लगाया
- इसकी जानकारी हमें "चचनामा" से मिलती है। (चच दाहिर का पिता था) सिन्ध के इतिहास की जानकारी इस पुस्तक से मिलती है।

तुर्क आगमन (आक्रमण)

महमूद गजनवी :-

- प्रथम तुर्क आक्रमणकारी जिसने भारत पर आक्रमण किया।
- सुल्तान की उपाधि धारण करने वाला प्रथम शासक था।
- 'गाजी' को उपाधि धारण की।
- 'बुत शिकन' (मूर्ति भंजक) की उपाधि धारण की।
- जिहाद (धर्म युद्ध)/जेहाद का नारा दिया।
- आक्रमण का वास्तविक उद्देश्य भारत की सम्पन्नता या लूट था।

आक्रमण :-

1. पहला आक्रमण काबुल - 1000 AD
2. मुल्तान पर आक्रमण 1005 AD
3. नारायणपुर (अलवर) पर आक्रमण 1009AD
4. थानेश्वर (हरियाणा) 1014AD
5. कश्मीर पर 1016AD- पहला असफल आक्रमण
6. कन्नौज व मथुरा - 1018-19AD
7. प्रभास पट्टन (सोमनाथ) पर आक्रमण 1026 AD में भीम प्रथम (चालुक्य) शासक।
8. 1027 में जाटों पर अन्तिम आक्रमण

मोहम्मद गौरी :-

- मूलतः गौर प्रान्त के थे इसलिए गौरी कहलाये
- 1175 ई. में मुल्तान पर आक्रमण।
- 1178 ई. में गुजरात पर आक्रमण
- गुजरात पर मूल द्वितीय या भीम द्वितीय का शासन था। वास्तविक शक्तियाँ उसकी माता नायिका देवी के पास थी।
- आबू की तराई में गौरी की सेना बुरी तरह पराजित हुई।

1191 ई. में तराईन का प्रथम युद्ध

गौरी बनाम पृथ्वीराज चौहान (विजय हुआ)

- 1191 ई. में तराईन का द्वितीय युद्ध
- पृथ्वीराज मारा गया।
- गोविन्द राज इस समय दिल्ली का गवर्नर था

1194 ई. में चन्दावर का युद्ध

- गौरी बनाम जयचन्द (कन्नौज)
- गौरी जीत गया।
- मोहम्मद गौरी ने कुतुबुद्दीन ऐबक को विजित क्षेत्रों का गवर्नर नियुक्त किया एवं स्वयं गजनी (गौर) चला गया।
- 1205AD- खोखरों के विरूद्ध अभियान
- गौरी घायल हो गया एवं 1206 में उसकी मृत्यु हो गई।
- गौरी ने मौहम्मद बिन साम नाम के सिक्के चलाऐ जिन्हे देहलीवाल सिक्के कहा जाता है।
- सिक्को पर देवी लक्ष्मी का चित्र मिलता है।

सल्तनत काल (1206 -1526)

मामूलक/गुलाम वंश :-

इस वंश के सभी प्रमुख शासक गुलाम (मामूलक) वंश के थे इसलिए इसे गुलाम वंश कहा गया

1. कुतुबद्दीन ऐबक (1206-1210) :-

- वास्तव में 1192 से 1210 ई. तक पहले गवर्नर था, बाद में शासक बना।
- ऐबक का शाब्दिक अर्थ -"चन्द्रमा का स्वामी"

ऐबक की उपाधियाँ :-

- कुरान खाँ
- लाख बक्श (लाख)
- हातिम द्वितीय
- पील (हाथी) बक्श (बख्श)

ऐबक की राजधानी – लाहौर

- कुतुबुद्दीन ऐबक ने सुल्तान की उपाधि धारण नहीं की थी ।
- अपने नाम के सिक्के नहीं चलाये ।
- 1210 ई. में लाहौर में चौगान (पोलो) खेलते समय घोडे से गिरकर मौत हो जाती है ।

2. इल्तुमिश (1211–1236 ई.) :–

- सुल्तान बनने से पहले बदायूं का गवर्नर था ।
- मुईज्जी एंव कुत्बी अमीरों का दमन करने के लिए'तुर्कान–ए–चिहलगानी'(40–चालीसा दल) का गठन किया ।
- इसे ''सल्तनत का वास्तविक संस्थापक'' कहा जाता है ।
- राजधानी दिल्ली को बनाया ।
- तराईन का तीसरा युद्ध – 1216 ई. इल्तुतमिश बनाम यल्दौज (पराजित व मारा जाता है)
- 1221 ई. में जलालुद्दीन मंगबरनी का पीछा करते हुए चंगेज खान सल्तनत की तरफ आ रहा था इल्तुतमिश ने जलालुद्दीन मंगबरनी को सहायता न देकर नव स्थापित सल्तनत की रक्षा की ।
- 1229 ई. में खलीफा से मान्यता प्राप्त की ।
- नई मुद्रा जारी की थी ।
  1. चाँदी का टंका
  2. ताँबे का जितल
- 1236 ई. में मृत्यु
- 'इक्ता प्रणाली' को विकसित किया ।

3. रजिया सुल्ताना (1236–40 ई.) :–

- रजिया कुबा एवं कुलाह पहनकर दरबार में आती थी सिंहासन पर बैठती थी । प्रथम महिला शासक
- गैर तुर्क लोगों को महत्वपूर्ण पद प्रदान किए :–
  अल्तुनिया – तबर हिन्द का गवर्नर (भटिण्डा)
  याकूत – अमीर –ए–आखूर (अश्व शाला का प्रमुख)
  एतगीन – अमीर
- कैथल (हरियाण) नामक स्थान पर डाकुओं ने रजिया की हत्या कर दी ।

4. बलबन (1266–86): –

- चालीसा दल का सदस्य था ।
- राजत्व का दैवीय सिद्धान्त –
  1. जिल्ल– ए– इलाही (ईश्वर की छाया)
  2. नियामत– ए– खुदाई (ईश्वर का प्रतिनिधि)
- यह रक्त की शुद्धता में विश्वास रखता था ।
- इसका संबंध ईरान के अफरासियाब वंश से था
- इसने ईरानी रीति – रिवाज एवं प्रथाएँ आरम्भ की ।
  1. सिजदा
  2. पैबोस / पायबोस
  3. नोरोज / नवरोज त्यौहार
  4. तुलादान
  5. ताजिया
- इसने सैनिक विभाग की स्थापना की – 'दीवान ए अर्ज'
- गुप्तचर विभाग = दीवान ए बरीद
- बलबन ने लौह एवं रक्त की नीति का अनुसरण किया ।
- इसने दिवान ए अर्ज की स्थापना की ।

खिलजी वंश

- खिलजी वंश की स्थापना खिलजी क्रान्ति कहलाती है

1. जलालुद्दीन खिलजी (1290–96):– (जलालुद्दीन फिरोज तुगलक)

- किलोखरी को 1 वर्ष तक अपना केन्द्र बनाकर रखा
- यह लालमहल के सिंहासन पर कभी नही बैठा
- रणथम्भौर पर आक्रमण किया । जलालुद्दीन खिलजी ने कहा–मेरे सैनिक के एक बाल की कीमत इस किले से कही ज्यादा है ।
- 'दीवान ए वकूफ' की स्थापना । (व्यय विभाग)
- इसके भतीजे अलाउद्दीन खिलजी ने कडा (इलाहाबाद) में इसकी हत्या कर दी ।

2. अलाउद्दीन खिलजी (1296–1316 ई.) :–

बचपन का नाम– अली गुरूशास्प/गुर्शास्प
सुल्तान बनने से पूर्व कडा (इलाहाबाद) का सूबेदार था कडा का सूबेदार रहते समय इसने दक्षिण भारत अभियान किया था । '' सिकन्दर सानी ''उपाधि धारण की ।

सैनिक अभियान :–

1. 1299 ई. (गुजरात) :–
   यहाँ का शासक कर्ण था । कर्ण अपनी बेटी देवलरानी के साथ देवगिरी भाग गया ।
2. 1300 ई. (जैसलमेर)
3. 1301 ई. (रणथम्भौर) :–
   - यहाँ का शासक हम्मीर देव था । नुसरत खान इस युद्ध में मारा गया ।
4. 1303 ई. (चित्तौड):– चित्तौड को जीतकर इसका नाम खिज्राबाद रख दिया तथा खिज्र खाँ को सूबेदार बनाया ।

- चित्तौड के शासक रावल रतन सिंह पर ।
- 'पदमावत्' के लेखक मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा लिखी गई ।

5. 1305 ई.(मालवा) :-
6. 1308 ई. (सिवाणा) :- खैराबाद
7. 1311 ई. (जालौर) :-

जालौर को जीतकर (जिलालाबाद) नाम रखा ।

चार खाँ :-

1. जफर खाँ - मंगोलो से लडता हुआ मारा गया
2. नुसरत खाँ - रणथम्भौर युद्ध में मारा गया ।
3. उलूग खाँ
4. अल्प खाँ

अन्य सेनापति :-

1. गाजी मलिक
2. मलिक काफूर :- यह हिन्दू था बाद में इस्लाम स्वीकार किया । यह हिंजडा था ।

- 1000 दीनार से खरीदने के कारण इसे "हजार दिनारी" कहा जाता है ।
- दक्षिण के अभियानों का नेतृत्व मलिक काफूर ने ही किया था ।

दक्षिण भारत के अभियान

(i) देवगिरी आक्रमण :-
रामचन्द्र देव (यादव वंश) रामदेव ने अलाउद्दीन की अधीनता स्वीकार कर ली

(ii) वारंगल (तेलंगाना) :-
प्रतापरूद्रदेव ने अधीनता स्वीकार कर ली । मलिक काफूर को कोहिनूर का हीरा भेंट में दिया ।

(iii) द्वारसमुद्र :- वीर बल्लाल देव (होयसल वंश)

(iv) मदुरै :- वीर पाण्डेय एवं सुन्दर पाण्डेय

- मलिक काफूर का सबसे सफल अभियान ।
- वीर पाण्डेय ने अधीनता स्वीकार नहीं की ।

सैनिक सुधार :-

- इसने विशाल एवं नियमित सेना का गठन किया
- सैनिकों को नियमित वेतन देना प्रारम्भ किया ।
- खुम्स (लूट) में सैनिकों की भागीदारी मात्र 20% कर दी गई ।

		सेना	सुल्तान
खुम्स	पहले	80%	20%
	अब	20%	80%

- सैनिकों का हूलिया लिखना प्रारम्भ किया । "दीवान ए खारिज" हुलिया लिखता था ।
- घोडो को दागने की प्रथा प्रारम्भ की ।

बाजार को तीन भागों में बाँटा गया :-

1. सराय ए अदल (सराय-अदल सरकारी सहायता प्राप्त बाजार था जहाँ वस्त्र एवं अन्य वस्तुओं का व्यापार होता था ।)
2. मण्डी
3. दास, घोडे, एवं पशुओं का बाजार
   - शहना ए मण्डी नामक अधिकारी नियुक्त किया गया यह मण्डी में पुलिस अधिकारी होता थ

(3) मुबारक खिलजी (1316-1320)

- अलाउद्दीन खिलजी का पुत्र था । खिलजी वंश का अन्तिम शासक था, इसके बाद इसके मित्र नेराज किया ।

अमीर खुसरो :-

- ये अलाउद्दीन खिलजी के दरबार में रहते थे ।
- महान कवि, जन्म-पटियाली , ईटा (यू.पी.)
- "भारत का तोता" तथा "तुती ए हिन्द" के नाम से भी जाना जाता था ।
- एकमात्र ऐसे कवि थे जिन्होने दिल्ली शासनकाल के 8 राजाओं का शासन देखा था
- ये निजामुद्दीन औलिया का शिष्य था ।
- तम्बूरा वाद्य यंत्र भी इन्होने ही बनाया ।
- 'कव्वाली का जनक"

तुगलक वंश

- सर्वाधिक 94 वर्ष शासन किया । (सल्तनत काल में)

1. गयासुद्दीन तुगलक (1320-25 ई.) :-

- वास्तविक नाम गाजी मलिक
- प्रथम सुल्तान था जिसने अपने नाम के आगे "गाजी" (धर्मयोद्धा) शब्द का प्रयोग किया ।
- इसकी राजस्व पद्धति रस्म ए मियानी के नाम से जाना जाता है ।
- ये पहला शासक था जिसने कैनाल का निर्माण करवाया

आधुनिक भारत का इतिहास

भारत में यूरोपियन शक्तियों का आगमन

सत्रहवीं शताब्दी के दौरान भारत विदेशी व्यापार का एक ऐसा आकर्षण केन्द्र बन गया था कि हर विदेशी राष्ट्र व्यापार के माध्यम से उस पर अपना आधिपत्य जमाना चाहता था। क्योंकि –
भारत में अग्रांकित यूरोपियन शक्तियाँ अपने हित साधने हेतु आयी –

पुर्तगाल – (1498)
डच – (1596)
अंग्रेज – (1600)
डेनिश – (1616)
फ्रांसीसी - (1664)
स्वीडिश – (1731)

1. पुर्तगाली

- प्रथम पुर्तगाली यात्री 'वास्को – डी – गामा' था जिसने भारत की खोज (1498) की।
- अब्दुल मनीक नामक गुजराती व्यक्ति उसका मार्गदर्शक था।
- वास्को – डी – गामा पश्चिमी तट के कालीकट बन्दरगाह पर आया था।
- कालीकट के जमोरिन (वहाँ का राजा) ने वास्को – डी – गामा का स्वागत किया।
- वास्को – डी – गामा को भारत के साथ व्यापार में 60 गुना फायदा हुआ था।
- 1502 में वास्को – डी – गामा दूसरी बार भारत आया।
- 1524 में वास्को – डी – गामा की भारत में ही मृत्यु हो गई।
- 1961 तक इनका गोआ, दमन व द्वीप पर अधिकार था।
- पेड्रो अल्वारेज केबाल : दूसरा पूर्तगाली यात्री (1500 ई. में)
- 1503 में पूर्तगालियों ने कोचीन में प्रथम फैक्ट्री की स्थापना की।
- पूर्तगालियों का प्रथम गर्वनर फ्रांसिस्को – डी – अल्मेडा भारत में 1505 में बनाया।
- अल्फांसो – डि – अल्बुकर्क : द्वितीय पूर्तगाली गर्वनर 1509 में भारत आया।
- यह पूर्तगालियों का भारत में वास्तविक संस्थापक था
- (1509 में) अल्बुकर्क ने कृष्णदेवराय (विजयनगर) के कहने पर बीजापुर के राजा युसुफ आदिल शाह से गोवा छीन लिया था
- 1530 में 'नीनो डि कुन्हा' ने कोचीन से अपनी राजधानी को गोवा में विस्थापित कर ली थी
- 1961 में गोवा, दमन, द्वीप पर अधिकार।

नोट : 1542 में जेसुइट संत जेवियर (पादरी), अल्फांसो डी सूज़ा (गर्वनर) के साथ भारत आया था।
नीले समुद्र की नीति – पूर्तगालियों का समुद्र पर एकाधिकार था।

पूर्तगालियों का सामुद्रिक साम्राज्य एस्तादो द इण्डिया कहलाता था।

- पूर्तगालियों ने भारत में बडे जहाजों का निर्माण प्रारम्भ किया।
- 1556 में गोवा में पहली बार प्रिंटिंग प्रेस (छापाखाना) लगाया गया।
- मक्का और तम्बाकू की फसल बाद में पूर्तगालियों ने प्रारम्भ की।
- स्थापत्य कला की ''गोथिक शैली'' प्रारम्भ की। (ऊँची उठी हुई छते)

2. डच

कार्नेलियन डे हस्तमान : पहला डच यात्री 1596 में भारत आया।

- 1602 में डच ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना हुई
- 1605 में 'मसूलीपट्टनम' (पूर्वी तट पर) में पहली फैक्ट्री की स्थापना की।
- 1653 में चिनसूरा (बंगाल) में फैक्ट्री शुरू की।
- इस फैक्ट्री को गुस्तावास फोर्ट कहा जाता था।
- 1759 में अंग्रेजो ने 'वेदरा के युद्ध' में डचों को हरा दिया था।

3. डेनिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी

- डेनमार्क की ''ईस्ट इण्डिया कम्पनी'' की स्थापना 1616 ई. में हुई।
- इस कम्पनी ने 1620 में त्रैंकोंवार (तमिलनाडु) तथा 1667 में सेरामपुर (बंगाल) में अपनी व्यापारिक कम्पनियाँ स्थापित किये।
- श्रीरामपुर डचों का प्रमुख केन्द्र था।
- 1854 में डचों ने अपनी वाणिज्यिक कम्पनी अंग्रेजों को बेच दी।

4. अंग्रेज

जॉन मिडेनहॉल (1599) : प्रथम अंग्रेज यात्री

- 31 दिसम्बर 1600 की ईस्ट इण्डिया कम्पनी (अंग्रेजी) की स्थापना की गई ।
- यह एक निजी कम्पनी थी ।
- महारानी ऐलिजाबेथ प्रथम ने कम्पनी को भारत में व्यापार के लिए 15 वर्षो का एकाधिकार दिया । कालान्तर में इसे 20-20 वर्षो के लिए आगे बढाया गया ।
- 1608 में इंग्लैण्ड के राजा जैम्स प्रथम का राजदूत कैप्टन हॉकिन्स मुगल बादशाह जहाँगीर के दरबार में आया । वह फारसी भाषा का जानकार था ।
- जहाँगीर ने इसे 400 का मनसब दिया था । लेकिन वह व्यापारिक रियायतें प्राप्त नहीं कर पाया था ।
- 1615 में सर टॉमस रो भारत आये (द्वितीय राजदूत भारत आये) 10 जनवरी 1616 को अजमेर में जहाँगीर से मुलाकात की तथा व्यापारिक रियायते प्राप्त करने में सफल रहा । (लेकिन वास्तव में ये रियायते गुजरात के गवर्नर खुर्रम (शाहजहाँ) ने दी थी)
- 1608 में सूरत में प्रथम फैक्ट्री की स्थापना की
- अंग्रेजो ने चन्द्रगिरि के राजा से चैन्ने नामक गाँव खरीदा तथा यहाँ पर 1639 में मद्रास की स्थापना की ।यहाँ पर सेन्ट जॉर्ज नामक किला बनाया गया
- मद्रास का संस्थापक : फ्रांसिस डे था ।
- इंग्लैण्ड के राजकुमार चार्ल्स द्वितीय की शादी पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन के साथ हुई तथा बॉम्बे दहेज में दिया गया । (1661 में)
- 1668 में बॉम्बे में फैक्ट्री की स्थापना की ।
- 1698 में यहाँ कलकत्ता (कलिकाता) में फैक्ट्री की स्थापना की गई । यहाँ पर फोर्ट विलियम बनाया गया
- संस्थापक : जॉब चारनाक

4 फ्रांसिसी

- 1664 में फ्रांसीसी ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना की गई ।
- नोटः- यह कम्पनी एक 'सरकारी कम्पनी' थी
- 1668 में सूरत में पहली फैक्ट्री की स्थापना की
- संस्थापक : फ्रेंको कैरो
- 1669 में मसूलीपट्टम में फैक्ट्री की स्थापना की
- 1673 में पुदुचेरी गाँव खरीदा तथा यहाँ पर पाण्डीचेरी की स्थापना की ।
- 1674 में बंगाल में चन्द्रनगर नामक गाँव खरीदा

अंग्रेज फ्रांसीसी संघर्ष

- अंग्रेजो तथा फ्रांसीसीयों के बीच 3 युद्ध हुये थे जिन्हें कर्नाटक युद्ध कहा जाता हैं ।

1. प्रथम कर्नाटक युद्ध : (1746-1748)

कारण : ऑस्ट्रिया का उत्तराधिकार

- एक्स ला शापेल की सन्धि द्वारा यह युद्ध समाप्त हो गया ।
- प्रथम कर्नाटक युद्ध को सैंट थोम युद्ध के रूप में ।

2. दूसरा कर्नाटक युद्ध : (1749-1754)

रियासत	राजा	राजा
1. कर्नाटक	अनवरूद्दीन (सहायक - अंग्रेज)	चन्दा साहिब (सहायक - फ्रांसिसी)
2. हैदराबाद	नासिर जंग (सहायक - अंग्रेज)	मुजफ्फर जंग (सहायक - फ्रांसिसी)

अम्बूर का युद्ध - 1749

- फ्रांसिसी, चान्दा साहिब, मुजफ्फर जंग से मिलकर अनवरूद्दीन को मार दिया ।
- मुजफ्फरजंग ने डुप्ले को कृष्णा नदी के दक्षिण का भाग दिया तथा बस्सी के नेतृत्व में एक सेना (फ्रांसिसी) हैदराबाद में रखी गई ।
- इस प्रकार भारत में सहायक सन्धि की शुरूआत डुप्ले ने की थी ।
- कालान्तर में इस अंग्रेजी गर्वनर जनरल वेलेजली ने बडे तौर पर लागू किया था ।
- डुप्ले को हराकर गोडेहू को नया फ्रांसिसी गर्वनर बनाया गया ।
- इस युद्ध में अन्त में अंग्रेजो की जीत हुई थी ।

3. तीसरा कर्नाटक युद्ध : (1756-63)

कारणः कनाडा पर अधिकार करने के लिए इंग्लैण्ड और फ्रांसिसीयों के बीच सात वर्षीय युद्ध

वाडीवाश का युद्ध (1760)

इस युद्ध में फ्रांसिसी निर्णायक रूप से हार गये थें । अंग्रेजो ने पाण्डिचेरी पर भी अधिकार कर लिया था ।

- पैरिस की संधि द्वारा युद्ध समाप्त हो गये ।

संविधान संशोधन अनुच्छेद 368

भाग–20

- भारतीय संविधान कठोरता व लचीलापन दोनो ही विशेषताओं को धारण किए हुऐ है ।
- सामान्य प्रावधानों मे साधारण बहुमत के साथ संशोधन किया जा सकता है, जबकि विशेष प्रावधानों मे विशेष बहुमत की आवश्यकता होती है ।
- जबकि केन्द्र राज्यों के संबंधों को प्रभावित करने वाले अनुच्छेदों मे संशोधन करने के लिए विशेष बहुमत के साथ–साथ आधे राज्यों के विधानमण्डल का समर्थन भी आवश्यक होता है ।

संविधान संशोधन

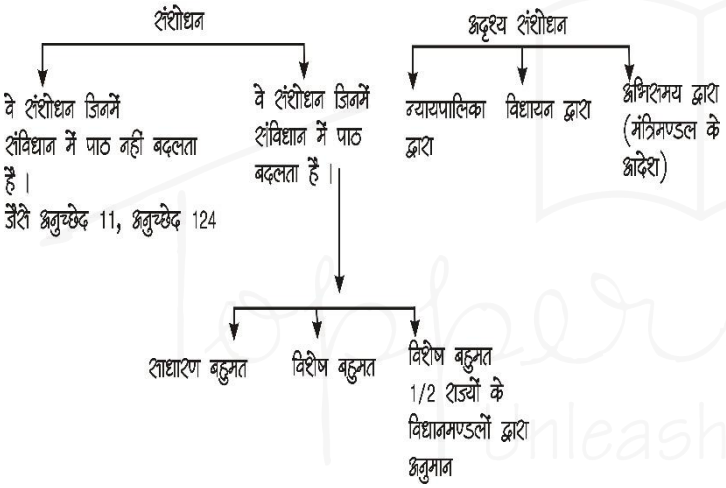

अनु. 368

संविधान के भाग 20 के अन्तर्गत अनु. 368 संसद की संविधान संशोधन की शक्ति का वर्णन है ।
भारत मे संविधान संशोधन की प्रक्रिया न तो अमेरिका (संघात्मक) जितनी कठोर है और न ही ब्रिटेन (एकात्मक) जितनी लचीली ।

साधारण बहुमत से संशोधन:–

नये राज्यों का बनना, सीमाऐं, परिवर्तित करना, राष्ट्रपति राज्यपाल आदि के वेतन भत्ते बढावा, सांसदो के वेतन भत्ते बढावा, चुनाव क्षेत्रो का परिसीमन आदि ।

संविधान संशोधन विधेयक :–

संसद के किसी भी सदन मे किसी भी सदस्य द्वारा राष्ट्रपति की पूर्वानुमति के बिना लाया जा सकता है
संविधान संशोधन विधयेक के लिए लोकसभा एवं राज्यसभा की संयुक्त बैठक का प्रावधान नही है, और राष्ट्रपति के द्वारा इसको स्वीकृत देना अनिवार्य है
संविधान के महत्वपूर्ण प्रावधान यथा मूल अधिकार नीति निर्देशक तत्व आदि मे संशोधन के लिए विशेष बहुमत की आवश्यकता होती है, इससे तात्पर्य है कि सदन की कुल संख्या के आधे से ज्यादा तथा उपस्थित व मतदान करने वालों का 2/3 बहुमत
संविधान के ऐसे प्रावधान जिनका संबंध संघीय ढांचे से है उनमे संशोधन के लिए विशेष बहुमत के साथ–साथ आधे राज्यों की साधारण बहुमत से सहमति भी आवश्यक है । इसके लिए संविधान मे समय–सीमा का कोई उल्लेख नही है ।

उदाहरण:–

राष्ट्रपति का चुनाव, केन्द्र व राज्य की कार्यपालिका शक्ति का विस्तार, सुप्रीम कोर्ट, हाई कोर्टस् केन्द्र एवं राज्य की विधायी शक्ति का बंटवारा, सातवाँ अनुसूची की कोई सूची, संसद मे राज्यों का प्रतिनिधित्व

आलोचना :–

1. संशोधन की प्रक्रिया का प्रारम्भ करने का अधिकार केवल केन्द्र के पास है । अतः अपवादों को छोडकर राज्य प्रक्रिया प्रारम्भ नही कर सकते (अमेरिका मे 2/3 राज्य मिलकर संविधान संशोधन प्रस्तावित कर सकते है जो कि 3/4 के समर्थन से लागू हो जायेगा ।

अपवाद :–

राज्य विधानसभा 2/3 बहुमत से विधानपरिषद गठल करने का अथवा भंग करने का प्रस्ताव केन्द्र को भेज सकती है ।

महत्वपूर्ण संविधान संशोधन :–

1. 1/1951 SC, ST तथा सामाजिक, शैक्षिक, पिछडों के लिए विशेष प्रावधान – अनु. 15
2. 7/1956 राज्यों का पूनर्गठन – 14 राज्य व 6 केन्द्र शासित प्रदेश बने ।
3. 21/1967'सिन्धी भाषा को 8वीं अनुसूची मे 15वीं भाषा के रूप मे मान्यता मिली ।
4. 25/1971 अनु. 39 (B) व 39 (C) को क्रियान्वित करने वाला कानून अनु. 14,19,31 का उल्लंघन कर सकता है
5. 26/1971 प्रिवीपर्स की समाप्ति
6. 35/1974 सिक्किम को भारत का सहयोगी राज्य बनाया और 10वीं अनुसूची मे शर्त लिखी ।
7. 36/1975 सिक्किम को पूर्ण राज्य बनाया 10वीं अनुसूची समाप्त
8. 42/1976 सरदार स्वर्ण सिंह समिति की रिपोर्ट क्रियान्वित हुई । (इसे लघु संविधान भी कहते है)
   – प्रस्तावना मे 3 नये शब्द जोडे गये
   1. समाजवादी
   2. धर्म निरपेक्ष
   3. अखण्डता

– मूल कर्तव्य जोडे गये (अनु. 51 (A) व भाग 4 (A)
– राष्ट्रपति सलाह मानने के लिए बाध्य है
– प्रशासनिक अधिकरणों एवं अन्य अधिकरणों की व्यवस्था (भाग – 14 (A))
– लोकसभा सीट – 1971 की जनसंख्या के आधार पर 2001 तक लोकसभा की सीटें निश्चित की ।

3 नये नीति निर्देशक तत्व जोडे

1- समान न्याय नि:शुल्क विधिक सहायता (अनु. 39 (A)
2. उद्योगो के प्रबन्धन मे कार्मिको की भागीदारी 43 (A)
3. पर्यावरण संरक्षण तथा वन व वन्य जीवों की रक्षा (अनु. 48 (H)

5 विषयों की राज्य सूची से हटा कर समवर्ती सूची मे डाला

1. शिक्षा
2. वन
3. वन्य पशु, पक्षियों का संरक्षण
4. नाप एवं तोल
5. न्याय प्रशासन अर्थात सुप्रीम कोर्ट व हाई कोर्ट को छोडकर सभी न्यायालयों का प्रशासन ।

9. 44/1978– संसद एवं राज्य विधायिका (विधानसभा) की सही रिपोर्ट को मीडिया को प्रकाशित करने का अधिकार दिया ।
मंत्रिपरिषद की सिफारिश को राष्ट्रपति को एक बार लौटाने का अधिकार दिया ।
राष्ट्रीय आपात के संदर्भ मे आंतरिक अशांति के स्थान पर 'सशस्त्र विद्रोह' तथा केबिनेट को लिखित सलाह को अनिवार्य किया ।
सम्पत्ति के अधिकार को मूल अधिकार से हटाकर साधारण विधिक अधिकार बनाया ।
राष्ट्रीय आपात की स्थिति मे भी अनु. 20 और 21 को निम्नलिखित नही किया जा सकता ।
10. 52/1985– दल बदल निरोधक कानून 10वीं अनुसूची संविधान मे डालों
11. 61/1989–वोटर की आयु 21 से घटाकर 18 वर्ष कर दिया गया (लोकसभा व विधानसभा)
12. 65/1990– S.C. ST के लिए बहुसदस्यीय राष्ट्रीय आयोग ।
13. 69/1991– दिल्ली को विशेष दर्जा देते हुए (NCT National Capiital Tarritory) कहा – 70 सदस्यीय विधानसभा बनाई (मंत्रिपरिषद के 7 सदस्य हो सकते हैं)
14. 70/1992– दिल्ली एवं पाण्डिचेरी के विधायकों को राष्ट्रपति चुनाव मे वोट का अधिकार दिया ।
15. 71/1992– कोंकणी, मणिपुर, नेपाली भाषाओं को संविधान को 8वीं अनुसूची मे डाला ।
16. 73/1992–संविधान मे भाग 9 जोडा जिसमें पंचायतों राज का विवरण है तथा 11वीं अनुसूची जोडी जिसमें पंचायतों के 29 विषयों का विवरण है ।
17. 74/1992–इसके माध्यम से संविधान मे भाग 9 (A) जोडा, जिसमें नगर पालिकाओं का विवरण है
– 12वीं अनुसूची जोडी गई जिसमें 18 विषयों का विवरण है ।
18. 75/1994–किराये का अधिकरण ।
19. 77/1995–S.C. ST को प्रमोशन मे आरक्षण अनु.
20. 84/2001–1971 की संख्या 2026 तक मानी जायेगी (लोकसभा चुनावों मे)
21. 86/2002–शिक्षा का मूल अधिकार (1) अनु. 21 (A) (2) अनु. 45 (3) अनु. 51 (A) में

11वां कर्तव्य

22. 88/2003–'सेवा कर' को केन्द्रीय सूची मे डाल गया
23. 89/2003– S.C. ST के आयोग अलग–अलग किये
24. 91/2003–15% से कम मंत्री होगे । छोटे राज्य मे कम से कम 12 सदस्य होगे (लोकसभा व विधानसभा)
25. 92/2003–'बोडो, डोगरी, मैथिली और सन्थाली' भाषाओं को संविधान की 8वीं अनुसूची मे शामिल किया
26. 93/2005–S.C. ST के लिए तथा सामाजिक एवं शक्षणिक रूप से पिछडे लोगो केलिए शैक्षणिक संस्थाओं मे आरक्षण अनु. 15 (5)
27. 97/2011– सरकारी संस्थाऐं
28. 99/2015–राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग की स्थापना जिसे उच्चतम न्यायालय ने असंवैधानिक घोषित किया ।
29. 100/2015–लैण्ड बाउन्ड्री एग्रीमेन्ट बांग्लादेश के साथ

भारतीय राज्यव्यवस्था से सम्बन्धि महत्वपूर्ण

- भारतीय संविधान सभा का गठन कैबिनेट मिशन प्रस्तावों के अनुसार किया गया ।
- इसके गठन के लिए जुलाई – अगस्त 1946 में चुनाव हुआ ।
- 3 जून 1947 के भारत संविधान की योजना की घोषणा के बाद इसका पुनगर्ठन हुआ तथा पुनर्गठित संविधान सभा की संख्या 299 थी ।

- संविधान सभा के वैधानिक सलाहकार (Constitutional Advisor) के पद पर बी.एन. राव को नियुक्त किया गया
- 29 अगस्त 1947 को संविधान सभा ने डॉ.बी.आर अम्बेडकर की अध्यक्षता में प्रारूप समिति (Drafting Committee) का गठन किया ।
- 15 नवम्बर 1948 को संविधान के प्रारूप पर प्रथम वाचन प्रारम्भ हुआ ।
- 26 नवम्बर 1949 को संविधान के प्रारूप पर अन्तिम वाचन हुआ और इसी दिन संविधान सभा द्वारा पारित कर दिया गया ।
- 26 नवम्बर 1946 को संविधान के उन अनुच्छेदों को प्रस्तावित कर दिया गया जो नागरिकता निर्वाचन तथा अंतरिम संसद से सम्बन्धित थे ।
- संविधान सभा का अंतिम दिन 24 जनवरी 1950 था और उसी दिन संविधान पर संविधान सभा के सदस्यों द्वारा हस्ताक्षर कर दिया गया ।
- संविधान के निर्माण में 2 वर्ष 11 माह और 18 दिन का समय लगा ।
- वर्तमान में संविधान में 444 अनुच्छेद और 12 अनुसूचियाँ हैं ।
- ''पंथनिरपेक्ष'', ''समाजवाद'' तथा ''अखण्डता'' शब्द संविधान की उद्देशिका में 42 वें संशोधन के द्वारा 1976 में जोडे गये ।
- भारती की उद्देशिका में प्रयुक्त ''गणतन्त्र'' शब्द का तात्पर्य यह है कि भारत का राज्याध्यक्ष वंशानुगत (hereditary) नहीं होगा ।
- उच्चतम न्यायालय के निर्णय के अनुसार – संविधान की उद्देशिका संविधान का एक भाग है और इसमें संशोधन किया जा सकता है (केशवानंद भारती बनाम केरल – 1973 ई.) ।
- प्रो. व्हीयर ने भारत के संविधान को अर्द्धसंघीय (Quasifederal) संविधान कहा है ।
- राज्य पुनगर्ठन अधिनियम 1956 द्वारा भाषाई आधारों पर राज्यों का पुनगर्ठन किया गया ।
- भारतीय संविधान में नागरिकता शब्द को परिभाषित नहीं किया गया है तथा इसके सम्बन्ध में अनुच्छेद 5 से 11 तक में प्रावधान किया गया है ।
- संविधान के अनुसार कुछ पद केवल भारतीय नागरिकों के लिए आरक्षित है, जैसे – राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, उच्चतम एवं उच्च न्यायालयों के न्यायाधीश, महान्याय वादी राज्यपाल एवं महाधिवक्ता का पद ।
- संविधान के 44 वे संशोधन द्वारा सम्पत्ति के मूलाधि कार को समाप्त करके इस अनुच्छेद 300 (क) के अन्तर्गत रखा गया है । अब यह केवल एक विधिक (Legal) अधिकार रह गया है ।
- अनु. 15,16,19,29 तथा 30 द्वारा प्रत्याभूत मूलाधिकार केवल नागरिकों को ही प्रदान किये गये हैं ।
  शेष सभी मूलाधिकार नागरिकों तथा अन्य व्यक्तियों को प्रदान की गयी है ।
- मूल कर्तव्यों को 42 वें संविधान संशोधन द्वारा 1976 में जोडा गया ।
- राष्ट्रपति अपने पद पर रहते हुये किसी भी कार्य के लिए न्यायालय में उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता है ।
- भारत में केवल नीलम संजीवा रेड्डी ही निर्विरोध राष्ट्रपति चुने गये ।
- भारत के दो राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन तथा फखरूद्दीन अली अहमद की अपने कार्यकाल के दौरान ही मृत्यु हुयी थी ।
- भारत के मुख्य न्यायधीश मोहम्मद हिदायतुल्लाह ने दो बार कार्यकारी राष्ट्रपति के पद का निर्वहन किया था ।
- भारत का उपराष्ट्रपति राज्यसभा का पदेन सभापति होता है तथा इसी पद के कारण उसका वेतन दिया जाता है ।
- संघ शासन की वास्तविक शक्ति केन्द्रीय मंत्रिमंडल में निहित होती है, जिसका प्रधान प्रधानमंत्री होता है।
- प्रधानमंत्री का यह कर्तव्य यह है कि संघ के शासन की जानकारी राष्ट्रपति को दे ।
- प्रधानमंत्री लोकसभा के बहुमत दल का नेता होता है ।
- केन्द्रीय मंत्रिपरिषद लोकसभा के प्रति सामुहिक रूप से उत्तरदायी होती है ।
- संसद के तीन अंग होते है – लोकसभा, राज्यसभा, और राष्ट्रपति ।
- सरकार के तीन अंग होते है – विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका ।
- राज्यसभा का गठन 3 अप्रैल 1952 को हुआ और इसकी पहली बैठक 13 मई 1952 को हुयी ।
- राज्यसभा के सदस्यों के पहले समूह की सेवा निवृति 2 अप्रैल 1954 को हुयी ।
- लोकसभा के परिक्षेत्र का परिसीमन आयोग द्वारा किया जाता है ।
- प्रथम लोकसभा की पहली बैठक 13 मई 1952 को हुई और 4 अप्रैल 1957 को पहली लोकसभा राष्ट्रपति द्वारा विघटित कर दी गयी ।
- राज्यसभा तथा लोकसभा के संयुक्त अधिवेशन की अध्यक्षता लोकसभा अध्यक्ष करता है ।

- लोकसभा के प्रथम अध्यक्ष गणेश वासुदेव मावलंकर थे । पं. जवाहर लाल नेहरू ने इन्हें संसद का पिता या जनक कहा था ।
- संयुक्त संसदीय समिति में लोकसभा को दो तिहायी तथा राज्यसभा के एक तिहायी सदस्य होते हैं ।
- धन विधेयक केवल लोकसभा में पेश किया जा सकता है
- धन विधेयक के सम्बन्ध में राज्यसभा को केवल सिफारिशी अधिकार हैं ।
- राज्यपाल विधान मंडल के सत्रावसान काल में अध्यादेश जारी कर सकता है । यह अध्यादेश 6 माह तक प्रभावी रहता है ।
- राज्यों की मंत्रिपरिषद सामुहिक रूप से विधानसभा के प्रति उत्तरदायी होती है तथा प्रत्येक मंत्री व्यक्तिगत रूप से राज्यपाल के प्रति उत्तरदायी होता है ।
- राज्य विधानमंडल में राज्यपाल तथा विधानसभा और विधान परिषद शामिल होता है ।
- राज्य के विधानसभा के सदस्यों की अधिकतम संख्या 500 और न्यूनतम संख्या 60 होगी ।
- विधानसभा की गणपूर्ति संख्या कुल सदस्यों का 1/10 है परन्तु यह किसी भी दशा में 10 सदस्यय से कम नहीं होगी ।
- संविधान के अनुच्छेद 370 द्वारा जम्मू कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा दिया गया है ।
- जम्मू-कश्मीर राज्य विधानसभा में दो महिलाओं को राज्यपाल नामजद करते है ।
- राष्ट्रपति जम्मू-कश्मीर के सम्बन्ध में वित्तीय आपात की घोषणा नहीं कर सकते ।
- राज्य के नीति-निर्देशक तत्वों से सम्बन्धित संविधान के भाग 4 के प्रावधान जम्मू-कश्मीर राज्य के विषय में लागू नहीं होते है ।
- जम्मू - कश्मीर राज्य का अपना संविधान है, जो एक पृथक संविधान सभा द्वारा बनाया गया है और यह संविधान 26 नवम्बर 1957 को लागू कर दिया गया ।
- भारत में केवल दो संघ शासित राज्यों में विधान सभायें है - दिल्ली और पांडिचेरी ।
- भारत में उच्च न्यायालय की संख्या 21 है ।
- देश में छः ऐसे राज्य है जहाँ पर विधान परिषदों का गठन किया गया है -
  1. उत्तर प्रदेश
  2. बिहार
  3. महाराष्ट्र
  4. कर्नाटक
  5. जम्मू कश्मीर(अब नही)
  6. आन्ध्र प्रदेश ।
- 4 अप्रैल, 2007 को आन्ध्र प्रदेश में पुनः विधानपरिषद का गठन किया गया ।
- राष्ट्रपति प्रत्येक पाँचवे वर्ष वित्त आयोग का गठन करता है ।
- प्रथम वित्त आयोग का गठन 1951 में किया गया था
- भारतीय संविधान के प्रवर्तित होने के बाद पहली बार राष्ट्रपति शासन पंजाब में लागू किया गया ।
- संविधान सभा के 284 सदस्यों ने संविधान पर हस्ताक्षर किये ।
- जब भारत आजाद हुआ तो उस समय ब्रिटेन के प्रधानमंत्री क्लामेंट एटली थे ।
- जब भारत आजाद हुआ तो उसक समय कांग्रेस केअध्यक्ष डे.पी. कृपलानी थे ।
- 15 अगस्त, 1947 से 26 जनवरी 1950 के मध्य भारत - ब्रिटिश राष्ट्रकुल का एक अधिराज था ।
- भारतीय संविधान 22 भागों में विभाजित किया गया है।
- भारतीय संविधान के प्रस्तावना के अनुसार भारत की शासन की सर्वोच्च सत्ता भारतीय जनता में निहित है ।
- भारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त मौलिक अधिकारों के स्थगन सम्बन्धी कार्यपालिका के अधिकारों को जर्मनी के संविधान से लिया गया है ।
- भारत संविधान संशोधन की प्रक्रिया दक्षिण अफ्रीका के संविधान से ली गयी है ।
- राज्य पुर्नगठन अधिनियम 1956 में पारित किया गया इसके अध्यक्ष फजल अली थे ।
- संविधान में प्रेस की स्वतंत्रता का अलग से प्रबन्ध नहीं किया गया है । यह अनुच्छेद 19 (1) A से अंर्तनिहित है ।
- डॉ. बी.आर. अम्बेडकर ने सवैधानिक उपचारों के अधिकार को संविधान का हृदय व आत्मा कहा है ।
- 42 वें संविधान संशोधन द्वारा संविधान में मूल कर्तव्यों को शामिल किया गया है । इन्हें संविधान के भाग IV ए और अनुच्छेद 51 ए में शामिल किया गया है ।
- राष्ट्रीय आपात की स्थिति में मौलिक अधिकारों का हनन हो जाता है ।
- संविधान में 10 मौलिक कर्तव्यों का वर्णन किया गया है । मूल कर्तव्य (अनु. 51 क) को 42 वें संविधान संशोधन 1976 में जोडा गया ।
- 86 वें संविधान संशोधन द्वारा एक मूल कर्तव्य और जोडा गया जिससे इसकी संख्या अब ग्यारह हो गई

भारतीय भूगोल
(Indian Geography)

भारत का विस्तार–

- भारत की स्थिति उत्तरी गोलार्ध एवं पूर्वी देशांतर में है ।
- भारत की आकृति चतुष्कोणीय है ।
- भारत का अक्षांशीय विस्तार 8°4 से 37°6 उत्तरी गोलार्ध में है ।
- देशांतरीय विस्तार 68°7 से 97°25 पूर्वी देशांतर में है ।
- भारत का विश्व में क्षेत्रफल की दृष्टि से सातवां एवं जनसंख्या की दृष्टि से दूसरा स्थान है।

विश्व में स्थान	देश का नाम	
	क्षेत्रफल के अनुसार	जनसंख्या के अनुसार
प्रथम	रूस	चीन
द्वितीय	कनाडा	भारत
तृतीय	चीन	यू.एस.ए
चतुर्थ	यू. एस. ए.	इंडोनेशिया
पंचम	ब्राजील	ब्राजील
षष्ठ	ऑस्ट्रेलिया	पाकिस्ताान
सप्तम	भारत	नाईजीरिया
अष्टम	अर्जेनटीना	बांग्लादेश

- भारत का कुल क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किमी है, जोकि विश्व के कुल क्षेत्रफल का 2.42% है ।
- भारत में विश्व की कुल जनसंख्या का 17.5% हिस्सा निवास करता है ।
- उत्तर से दक्षिण विस्तार 3214 किमी है और पूर्व से पश्चिम में विस्तार 2933 किमी है ।
- भारत का सबसे पूर्वी बिंदु अरुणाचल प्रदेश में वलांगु (किबिथू) है।
- सबसे पश्चिमी बिंदु गुजरात में गोरमाता सक्रिय (कच्छ जिला) में है ।
- सबसे उत्तरी बिन्दु इन्द्रा कॉल है, जो कि केन्द्र शासित प्रदेश लेह में स्थित है ।
- सबसे दक्षिणतम बिन्दु इन्दिरा पॉइंट है, इंदिरा पॉइंट को पहले पिग्मेलियन पॉइंट और पार्सन्स पॉइंट के नाम से जाना जाता था। इन्दिरा पॉइंट निकोबार द्वीप समूह में स्थित है। इसकी भूमध्य रेखा से दूरी 876 किमी है ।
- प्रायद्वीपीय भारत का सबसे दक्षिणी भाग तमिलनाडु में केप कोमोरिन (कन्याकुमारी) में स्थित है।
- भारत की स्थल सीमा की लम्बाई 15200 किमी है
- तटीय भाग की लम्बाई है 7516 किमी (द्वीप समूह मिलाकर)। केवल भारतीय प्रायद्वीप की तटीय सीमा 6100 किमी है ।
- भारतीय मानक समय रेखा 82°30 पूर्वी देशांतर पर है। मानक समय रेखा 5 राज्यों से होकर गुजरती है ।
  - उत्तर प्रदेश (मिर्जापुर)
  - छत्तीसगढ
  - मध्य प्रदेश
  - आंध्र प्रदेश
  - ओडिशा
- भारतीय मानक समय और ग्रीनविच समय के बीच अंतर 5.30 घण्टे का है । भारतीय समय ग्रीनविच समय से आगे चलता है ।
- सर्वाधिक राज्यों की सीमा को छूने वाला भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश है। उत्तर प्रदेश कुल 9 राज्यों से सीमा बनाता है ।
  - उत्तराखण्ड
  - हरियाणा
  - दिल्ली
  - हिमाचल प्रदेश
  - राजस्थान
  - मध्य प्रदेश
  - छत्तीसगढ
  - झारखण्ड
  - बिहार
- भारत के कुल 9 राज्य एवं – केन्द्र शासित प्रदेश समुद्री तट से लगे हुए है।
  - गुजरात
  - महाराष्ट्र
  - गोवा
  - कर्नाट
  - केरल
  - तमिलनाडु
  - अरूणाचल प्रदेश
  - उडीसा
  - पश्चिम बंगाल
- केन्द्र शामित प्रदेश
  - लक्षद्वीप
  - आण्डमान निकोबार
  - दमन और दीव
  - पुदुच्चेरी (पांडिचेरी)
- हिमालय को छूने वाले 11 राज्य व 2 केन्द्र शासित प्रदेश है।

राज्य

- हिमाचल प्रदेश
- उत्तराखण्ड
- सिक्किम
- अरुणाचल प्रदेश
- नागालैंड
- मणिपुर
- मिजोरम
- त्रिपुरा
- मेघालय
- असम
- पश्चिम बंगाल

केंद्र शासित प्रदेश

- जम्मू कश्मीर
- लेह

- भारत के 8 राज्यों से होकर कर्क रेखा गुजरती है।
  - गुजरात
  - राजस्थान
  - मध्य प्रदेश
  - छत्तीसगढ
  - झारखण्ड
  - पश्चिम बंगाल
  - त्रिपुरा
  - मिजोरम
- भारत का सर्वाधिक नगरीकृत राज्य गोवा है ।
- भारत का सबसे कम नगरीकृत राज्य हिमाचल प्रदेश है ।
- भारत का मध्य प्रदेश सबसे अधिक वन वाला राज्य है ।
- भारत का हरियाणा सबसे कम वन वाला राज्य है ।
- भारत का मौसिनराम (मेघालय) में सबसे अधिक वर्षा होती है ।
- भारत के केन्द्र शासित प्रदेश लेह में सबसे कम वर्षा होती है ।
- अरावली पर्वत सबसे प्राचीन पर्वत श्रृंखला है ।
- हिमालय पर्वत सबसे नवीन पर्वत श्रृंखला है ।

भारत की अंतरराष्ट्रीय सीमाएं एवं पडोसी देश

- भारत की कुल 15200 किमी सीमा रेखा 92 जिलों और 17 राज्यों से होकर गुजरती है ।
- भारत की तटीय सीमा 7516 किमी है जोकि 9 राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों को स्पर्श करती है। केवल प्रायद्वीप भारत की तटीय सीमा रेखा 6100 किमी है ।
- भारत के मात्र 5 राज्य ऐसे है जो किसी भी अंतर्राष्ट्रीय सीमा रेखा और तट रेखा को स्पर्श नहीं करते है –
  - हरियाणा
  - मध्य प्रदेश
  - झारखण्ड
  - छत्तीसगढ
  - तेलंगाना

- भारतीय राज्यों में गुजरात की तट रेखा सर्वाधिक लंबी है। इसके बाद आंध्र प्रदेश की तट रेखा है ।
- त्रिपुरा तीन तरफ से बांग्लादेश से घिरा राज्य है ।
- भारत के 7 पडोसी देश भारत की थल सीमा को स्पर्श करते है –
  - पाकिस्तान – 3323 किमी
  - चीन – 3488 किमी
  - नेपाल – 1751 किमी
  - बांग्लादेश – 4096.7 किमी
  - भूटान – 699 किमी
  - म्यांमार – 1643 किमी
  - अफगानिस्तान – 106 किमी

- भारत की सबसे लंबी अंतर्राष्ट्रीय सीमा बांग्लादेश के साथ लगती है ।
- भारत सबसे छोटी अंतर्राष्ट्रीय सीमा रेखा अफगानिस्तान के साथ साझा करता है जोकि केवल 80 किमी है ।
- भारत के 2 पडोसी देश जो भारत की तटीय सीमा के साथ जुडे हुए है।
  1. श्रीलंका
  2. मालद्वीप
- ऐसे देश जो थल एवं जल दोनों सीमा बनाते है।
  - पाकिस्तान
  - बांग्लादेश
  - म्यांमार
- पाकिस्तान के साथ भारत के 3 राज्य एवं 2 केन्द्र शासित प्रदेश सीमा साझा करते है –

राज्य
1. पंजाब
2. राजस्थान
3. गुजरात

केन्द्र शासित प्रदेश
1. जम्मू कश्मीर
2. लेह

- चीन के साथ भारत के 4 राज्य एवं 2 केन्द्र शासित प्रदेश सीमा साझा करते है –

राज्य

1. हिमाचल प्रदेश
2. उत्तराखण्ड
3. सिक्किम
4. अरुणाचल प्रदेश

केन्द्र शासित प्रदेश

1. जम्मू कश्मीर
2. लेह

- नेपाल के साथ भारत के 5 राज्य सीमा साझा करते हैं –
  1. उत्तराखण्ड
  2. उत्तर प्रदेश
  3. बिहार
  4. सिक्किम
  5. पश्चिम बंगाल

- भूटान के साथ भारत के 4 राज्य सीमा साझा करते हैं
  1. पश्चिम बंगाल
  2. सिक्किम
  3. अरुणाचल प्रदेश
  4. असम

- म्यांमार के साथ भारत के 4 राज्य सीमा साझा करते हैं –
  1. अरुणाचल प्रदेश
  2. नागालैण्ड
  3. मणिपुर
  4. मिजोरम

अफ्गानिस्तान के साथ भारत का एक केन्द्र शासित प्रदेश सीमा बनाता है – (केवल 80 किमी POK)

- लद्दाख

- पाक जलडमरूमध्य और मन्नार की खाडी श्रीलंका को भारत से अलग करती है। पाक जलडमरूमध्य को पाक जल संधि के नाम से भी जाना जाता है।
- मेकमोहन रेखा भारत और चीन के बीच में स्थित है । यह रेखा 1914 में शिमला समझौते में निर्धारित की गयी थी ।
- 1886 में सर डूरण्ड द्वारा भारत और अफ्गानिस्तान के बीच में डूरण्ड रेखा स्थापित की गई थी। परन्तु यह रेखा अब अफ्गानिस्तान एवं पाकिस्तान के मध्य है ।
- भारत और पाकिस्तान के बीच रेडक्लिफ रेखा है। रेडक्लिफ रेखा का निर्धारण 15 अगस्त, 1947 को सर सिरिल रैडक्लिफ की अध्यक्षता में सीमा आयोग द्वारा किया गया था ।

सीमावर्ती सागर :–

- सीमावर्ती सागर क्षेत्र आधार रेखा से 12**nm** तक स्थित है ।
- क्षेत्र में भारत का एकाधिकार है ।

1. संलग्न सागर :–

- संलग्न सागर क्षेत्र आधार रेखा से 24nm तक स्थित है ।
- इस क्षेत्र में भारत के पास वित्तीय अधिकार है ।

2. अनन्य आर्थिक क्षेत्र :–

- अनन्य आर्थिक क्षेत्र आधार रेखा से 200**nm** तक स्थित है ।
- इस क्षेत्र में भारत के पास आर्थिक अधिकार है तथा यहाँ भारत संसाधनों का दोहन, द्वीप निर्माण तथा अनुसंधान आदि कर सकता है ।
- उच्च सागर यहाँ सभी देशों का समान अधिकार होता है

भारत के भौगोलिक भ–भाग

भारत के भौगोलिक भू–भाग:-

1. हिमालयी पर्वतीय क्षेत्र
2. उत्तरी मैदान क्षेत्र
3. प्रायद्वीप पठार क्षेत्र
4. तटीय मैदान क्षेत्र
5. द्वीप समूह क्षेत्र

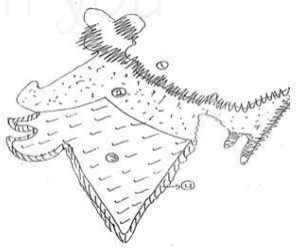

1. हिमालय पर्वतीय प्रदेश:–

- यह पर्वत तंत्र विश्व का सबसे ऊँचा पर्वत तंत्र है, इसलिए इस तंत्र में बहुत से अल्पाइन हिमनद भी पाये जाते है ।
- इस पर्वतीय प्रदेश को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है:–

A. हिमालय :-

हिमालय पर्वतीय प्रदेश का सबसे उत्तरी भाग ट्रांस हिमालय कहलाता है ।

- यह मुख्य रूप से 'जम्मू–कश्मीर' व 'तिब्बत' में स्थित है ।
- इस भाग में तीन प्रमुख पर्वत श्रेणियाँ पाई जाती है:–

fo'o dk lkekU; v/;;u

भूकंप

- भूकंपों का अध्ययन क्या कहलाता हैं –सिस्मोलॉजी
- भूकंप की तीव्रता की माप किस पैमाने पर की जाती है –रिक्टर पैमाने पर
- रिम्टर पैमाने का विकास किसने किया था –अमेरिकी वैज्ञानिक चार्ल्स रिक्टर द्वारा 1935 ई. में
- भूकंप में कितने तरह के कम्पन होते हैं –तीन (प्राथमिक तरंग, द्वितीय तरंग और एल तरंग)
- प्राथमिक तरगों का औसत वेग कितना होता है –8 किमी./सेकंड
- यह तरंग किस माध्यम से होकर गुजरती है –पृथ्वी के अंदर प्रत्येक माध्यम से
- द्वितीय तरंगों का औसत वेग कितना होता है –4 किमी./सेकंड
- यह तरंग किस माध्यम से होकर गुजरती है –केवल ठोस माध्यम से
- अनुप्रस्थ तरंगें कौन–सी हैं –द्वितीय तरंगें
- एल तरंगों का औसत वेग कितना होता है –1.5–3 किमी. सेकंड
- एल तंरगों को किस अन्य नाम से भी जाना जाता है –धरातलीय या लंबी तरंग
- इन तंरगों की खोज किसने की थी – एच. डी. लव ने
- यह तरंग किस माध्यम से होकर गुजरती है–ठोस, तरल तथा गैस तीनों माध्यमों से
- भूकंपीय तरंगों को किस यंत्र द्वारा रेखांकित किया जाता है – सिस्मोग्राफ (Seismograph)
- पृथ्वी के केंद्रीय भाग से कौन सी तरंगें गुजर सकती है – केवल प्राथमिक तरंगें
- गौण तरंगें कहाँ से नहीं गुजर सकती – द्रव पदार्थ में से
- कौन–सी तरंगें केवल धरातल के पास ही चलती है – एल तरंगें
- भूकंप के उद्‌भव–स्थान को क्या कहते हैं – भूकंप का केंद्र
- भूकंप के केंद्र के निकट कौन–सी तंरगें पहुँचती हैं – P.S तथा L तीनों प्रकार की तंरगें
- भूकंप के केंद्र के ठीक ऊपर पृथ्वी की सतह पर स्थित बिंदु को क्या कहते हैं – अधिकेंद्र
- अंतः सागरीय भूकंपों द्वारा उत्पन्न लहरों को जापान में क्या कहा जाता है – सुनामी

पर्वत

- निर्माण के आधार पर स्थलाकृतियाँ मुख्यतः कितने प्रकार की होती हैं – तीन (पर्वत, पठार और मैदान)
- उत्पत्ति के अनुसार पर्वत कितने प्रकार के होते हैं – चार (ब्लॉक पर्वत, अवशिष्ट पर्वत, संचित पर्वत और वलित पर्वत)
- जब चट्‌टानों मे स्थित भ्रंश के कारण मध्य भाग नीचे धँस जाता है तथा अगल–बगल के भाग ऊँचे उठे प्रतीत होते हैं, क्या कहलाते हैं – ब्लॉक पर्वत
- बीच में धँसे भाग को क्या कहते हैं – रिफ्ट घाटी
- इस प्रकार के पर्वत के उदाहरण क्या हैं – वॉस्जेस (फ्रांस), ब्लैक फॉरेस्ट (जर्मनी), साल्ट रेंज (पाकिस्तान)
- विश्व की सबसे लंबी रिफ्ट घाटी कौन–सी है – जॉर्डन नदी की घाटी (4,800 किमी.)
- अतीशष्ट पर्वत के उदाहरण क्या हैं – अरावली विंध्याचल एवं सतपुड़ा, पारसनाथ, राजमहल की पहाड़ियाँ (भारत), सीयरा (स्पेन), गैसा एवं बूटे (अमेरिका)
- भूपटल पर मिट्‌टी, धातु, कंकर, पत्थर, लावा के एक स्थान पर जमा होते रहने के कारण बनने वाला पर्वत कौन–सा होता है – संचित पर्वत
- रेगिस्तान में बनने वाले बालू के स्तूप किस पर्वत श्रेणी में आते हैं – संचित पर्वत श्रेणी के

- वलित पर्वत किस प्रकार बनते हैं – पृथ्वी की आंतरिक शक्तियों से धरातल की चट्टानों के मुड़ जाने से
- वलित पर्वत के उदाहरण क्या हैं – हिमालय, आल्पस, यूराल, रॉकीज, एण्डीज आदि
- वलित पर्वतों के निमाण का आधुनिक सिद्धांत किस संकल्पना पर आधारित है – प्लेट टेक्टॉनिक
- जहाँ आज हिमालय पर्वत खड़ा है, वहाँ किसी समय में क्या था – टेथिस सागर नामक विशाल भू–अभिनति अथवा भू–द्रोणी
- संसार के सबसे ऊँचा पर्वत हिमालय का निर्माण किस प्रकार हुआ – दक्षिण पठार के उत्तर की ओर विस्थापन के कारण टेथिस सागर में बल पड़ गए और वह ऊपर उठ गया
- विश्व का सबसे पुराना अवशिष्ट पर्वत कौन–सा है – भारत का अरावली पर्वत
- इसकी सबसे ऊँची चोटी कौन–सी है – माउंट आबू के निकट गुरूशिखर
- समुद्रतल से इसकी ऊँचाई कितनी है – 1,722 मी.
- स्थलमंडल के कुल क्षेत्रफल के कितने प्रतिशत भाग पर पर्वतों के विस्तार हैं – 26%
- पर्वत की गणना किस श्रेणी के स्थलों में की जाती है – द्वितीय श्रेणी
- विश्व की कितने प्रतिशत जनसंख्या पर्वतों पर निवास करती है – 1%
- 'रेडियो सक्रियता' का सिद्धांत किससे संबधित है – पर्वतों की उत्पत्ति से
- 'रेडियो सक्रियता' का सिद्धांत किसने प्रतिपादित किया – जॉली ने
- पर्वत निर्माणक भू–सन्नति सिद्धांत का प्रतिपादन किसने किया – कोबर ने
- विश्व के विशाल वलित पर्वतों की रचना कितने मिलियन वर्ष पूर्व हुई थी – 30
- नवीनतम पर्वतमाला कौन–सी है – हिमालय

नोट – नीचे कुछ पर्वतशिखर एवं उनसे संबंधित देश और ऊँचाइयाँ दी जा रही हैं, उपरोक्त प्रश्नों की भाँति याद करें।

पर्वत–शिखर	देश (ऊँचाई)
माउंट एवरेस्ट	नेपाल (8,850 मी.)
के–2 (गॉडविन आस्टिन)	भारत (8,611 मी.)
कंचनजंगा	नेपाल–भारत (8,598 मी.)
ल्हात्से 1	नेपाल (8,850 मी.)
मकालू 1	नेपाल–चीन (8,481 मी.)
धौलागिरी	नेपाल (8,172 मी.)
नंगा पर्वत	भारत (8,126 मी.)
अन्नपूर्णा	नेपाल (8,078 मी.)
ग्रेशरब्रम	पाकिस्तान (8,068 मी.)
गोसाईथान	चीन (8,018 मी.)
नंदादेवी	भारत (7,817 मी.)
राकापोशी	पाकिस्तान (7,788 मी.)
कामेट	भारत–चीन (7,756 मी.)
नाम्चाबर्वा	चीन (7,756 मी.)
तिरिचमीर	पाकिस्तान (7,728 मी.)
गुर्लमांधाता	चीन (7,728 मी.)

वायुदाब पेटियाँ

- पृथ्वी के धरातल पर कितने वायुदाब कटिबंध (पेटियाँ) हैं – चार (विषुवत् रेखीय निम्न वायुवाब, उपोष्ण उच्च वायुदाब, उपध्रुवीय निम्न वायुदाब, ध्रुवीय उच्च वायुदाब)
- विषुवत् रेखीय निम्न वायुदाब किन अक्षांशों के बीच स्थित है – भूमध्य रेखा से 10° उत्तरी तथा 10° दक्षिणी अक्षांशों के बीच
- शांत कटिबंध या डोलड्रम किसे कहते हैं – विषुवत् रेखीय निम्न वायुदाब
- उपोष्ण उच्च वायुदाब किन अक्षांशों के बीच स्थित है – उत्तरी तथा दक्षिणी गोलार्द्धों में क्रमशः कर्क और मकर रेखाओं से 35° अक्षांशों तक
- विषुवत् रेखा से 30° से 35° अक्षांशों के मध्य दोनों गोलार्द्धों में उच्च वायुदाब की पेटियों को क्या कहते हैं – अश्व अक्षांश
- 45° उत्तरी तथा दक्षिणी अक्षांशों से क्रमशः आर्कटिक तथा अंटार्कटिक वृत्तों के बीच निम्न वायु भार की पेटियों को क्या कहते हैं – उपध्रुवीय निम्न दाब पेटियाँ
- 80° उत्तरी तथा दक्षिणी अक्षांश से उत्तरी तथा दक्षिणी ध्रुव तक पेटियों को क्या कहते हैं – उच्च दाब पेटियाँ

पवन (Wind)

- वायुमंडल का वह विशाल एवं विस्तृत भाग जिसमें तापमान तथा आर्द्रता के भौतिक लक्षण क्षैतिज दिशा में समरूप हों, क्या कहलाता है – **वायुराशि**
- पृथ्वी के धरातल पर वायुदाब में क्षैतिज विषमताओं के कारण उच्च वायुदाब क्षेत्र से निम्न वायुदाब क्षेत्र की ओर बहने वाली हवा को क्या कहते हैं – **पवन**
- ऊर्ध्वाधर दिशा में गतिशील हवा को क्या कहते हैं – **वायुधारा (Air Current)**
- पृथ्वी के घूर्णन के कारण पवनें अपनी मूल दिशा में विक्षेपित हो जाती हैं, इसे क्या कहते हैं – **कॉरिऑलिस बल**
- सबसे पहले इस बल का वर्णन किसने किया था –**1835 ई. में फ्रांसीसी वैज्ञानिक गास्पार्ड–गुस्ताव दि कारिऑलि**
- इसे किस अन्य नाम से भी जाना जाता है – **फेरल का नियम (Farrel's Law)**
- इस बल का अधिकतम प्रभाव कहाँ होता है – **ध्रुवों पर**
- पवन कितने प्रकार की होती हैं – **तीन (प्रचलित पवन, मौसमी पवन और स्थानीय पवन)**
- पृथ्वी के विस्तृत क्षेत्र पर एक ही दिशा में वर्ष भर चलने वाली पवन को क्या कहते हैं – **प्रचलित पवन**
- इस प्रकार की पवनों के उदाहरण क्या हैं – **पछुआ पवन, व्यापारिक पवन और ध्रुवीय पवन**
- दोनों गोलार्द्धों में उपोष्ण उच्च वायुदाब कटिबंधों से उपध्रुवीय निम्न वायुदाब कटिबंधों की ओर चलने वाली स्थायी हवा को क्या कहते हैं – **पछुआ पवन**
- पछुआ पवन का सर्वप्रश्रेष्ठ विकास किन अक्षांशों के मध्य पाया जाता है – **40° से 65° द. अक्षांशों के मध्य**
- 30° उत्तरी और दक्षिणी अक्षांशों के क्षेत्रों या उपोष्ण उच्च वायुदाब कटिबंधों से भूमध्य रेखीय निम्न वायुदाब कटिबंधों की ओर दोनों गोलार्द्धों में वर्ष भर निरंतर प्रवाहित होने वाली पवन को क्या कहते हैं – **व्यापारिक पवन**
- ध्रुवीय उच्च वायुदाब की पेटियों से उपध्रुवीय निम्न वायुदाव की पेटियों की ओर प्रवाहित पवन को किस नाम से जाना जाता है – **ध्रुवीय पवन**

- मौसम या समय के परिवर्तन के साथ जिन पवनों की दिशा बदल जाती है, उन्हें क्या कहते हैं – **मौसमी पवन**
- मौसमी पवन के उदाहरण क्या हैं – **मानसूनी पवन, स्थल समीर तथा समुद्री समीर**
- आल्पस पर्वत के उत्तरी ढाल से नीचे उतरने वाली गर्म एवं शुष्क हवा कौन–सी है – **फॉन**
- इसका सर्वाधिक प्रभाव कहाँ होता है – **स्विट्जरलैंड**
- सहारा रेगिस्तान से उत्तर–पूर्व दिशा में चलने वाली गर्म एवं शुष्क हवा कौन–सी है – **हरमट्टन**
- गिनी तट पर इसे क्या कहा जाता है – **गिनी डॉक्टर**
- सहारा मरुस्थल से भूमध्य सागर की ओर ओर बहने वाली गर्म हवा को क्या कहते हैं – **सिरॉको**
- अरब रेगिस्तान में बहने वाली गर्म एवं शुष्क हवा को क्या कहते हैं – **सिमूम**
- उत्तर अमेरिका के विशाल मैदान में दक्षिणी–पश्चिमी या उत्तरी–पश्चिमी धूल भरी तेज आँधी कौन–सी है – **ब्लैक रोलर**
- ऑस्ट्रेलिया के विक्टोरिया प्रांत में चलने वाली गर्म एवं शुष्क हवा को क्या कहते हैं –**ब्रिक फील्डर**
- न्यूजीलैंड में उच्च पर्वतों से उतरने वाली गर्म एवं शुष्क हवा को क्या कहते हैं – **नार्वेस्टर**
- इराक तथा फारस की खाड़ी में चलने वाली गर्म एवं शुष्क हवा को क्या कहते हैं – **शामल**
- दक्षिणी कैलिफोर्निया में सांता आना घाटी से चलने वाली गर्म एवं शुष्क धूल भरी आँधी को क्या कहते हैं – **कोयम बैंग**
- जावा इंडोनेशिया में बहने वाली गर्म हवा को क्या कहते हैं – **कोयम बैंग**
- क्षोभमंडल की ऊपरी परत में बहुत तीव्र गति से चलने वाले संकरे, नलिकाकार एवं विसर्पी पवन–प्रवाह को क्या कहते हैं – **जेट–प्रवाह**
- यह किस दिशा में प्रवाहित होता है – **6 से 12 किमी. की ऊँचाई पर पश्चिम से पूर्व की ओर**
- इसकी चाल कितनी होती है – **120 किमी./घंटा**
- पृथ्वी पर तापमान के वितरण का संतुलन बनाने में कौन–सी पवन महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है – **जेट–प्रवाह**
- जब गर्म वायु हल्की होने के कारण ठंडी तथा भारी वायु के ऊपर चढ़ जाती है तो उसे क्या कहते है – **उष्ण वाताग्र**
- जब ठंडी तथा भारी वायु उष्ण तथा हल्की वायुराशि के विरूद्ध आगे बढ़ती है और उसे ऊपर की ओर उठा देती हैं, तो इसे क्या कहते हैं – **शीत वाताग्र**

आर्द्रता

- वायुमंडल में उपस्थित जलवाष्प को क्या कहते हैं – **वायुमंडल की आर्द्रता**
- आर्द्रता कितने प्रकार की होती है –**तीन (निरपेक्ष आर्द्रता, विशिष्ट आर्द्रता और सापेक्ष आर्द्रता)**
- वायु के प्रति इकाई आयतन में विद्यमान जलवाष्प की मात्रा को क्या कहते हैं – **निरपेक्ष आद्रता**
- इसे किसमें व्यक्त किया जाता है – **ग्राम प्रति घन मीटर में**
- वायु के प्रति इकाई भार में जलवाष्प के भार को क्या कहते हैं – **विशिष्ट आद्रता**
- इसे किसमें व्यक्त किया जाता है – **ग्राम प्रति किग्रा. में**
- किसी भी तापमान पर वायु में उपस्थित जलवाष्प तथा उसी तापमान पर उसी वायु की जलवाष्प धारण करने की क्षमता के अनुपात को क्या कहते हैं – **सापेक्ष आर्द्रता**
- संतृप्त वायु की सापेक्ष आर्द्रता कितनी होती है – **100%**

अर्थव्यवस्था

- प्राचीन समय में अर्थ शब्द का अभिप्राय धन से लिया जाता था ।
- किसी देश में होने वाली विभिन्न आर्थिक गतिविधियों को संचालित करने के लिए अपनायी गई व्यवस्था, नियम, नीतियाँ उस देश की अर्थव्यवस्था कहलाती है
- अर्थव्यवस्था तीन प्रकार की होती है–

1. समाजवादी अर्थव्यवस्था :–

- यदि अर्थव्यवस्था में उत्पादन के सभी साधनों और सम्पत्तियों पर सार्वजनिक क्षेत्र या सरकार का नियंत्रण हो तो वह समाजवादी अर्थव्यवस्था कहलाती है ।
- सरकार का उद्देश्य लाभ कमाना ना होकर समाज कल्याण होता है ।

2. पूंजीवादी अर्थव्यवस्था :–

- इस अर्थव्यवस्था में उत्पादन के साधनों और सम्पत्तियों पर निजी व्यक्तियों/निजी क्षेत्रों का नियत्रंण होता है ।
- इस अर्थव्यवस्था में व्यवसाय का उद्देश्य लाभ कमाना होता है ।

3. मिश्रित अर्थव्यवस्था :–

- इस अर्थव्यवस्था में समाजवाद व पूंजीवाद दोनों के लक्षाण पाये जाते है अर्थात उत्पादन के साधनों और सम्पत्तियों पर सरकार व निजी क्षेत्र दोनों का अधिकार होता है ।
- सरकार द्वारा सकारात्मक भूमिका निभाई जाती है ।
- भारतीय अर्थव्यवस्था मिश्रित प्रकार की अर्थव्यवस्था है ।

उत्पादन के कारक :– उत्पादन के लिए चार कारक महत्वपूर्ण माने जाते है ।

क्र.सं.	उत्पादन के कारक	लागत
1.	भूमि	किराया
2.	पूंजी	ब्याज
3.	श्रम	मजदूरी
4.	उद्यम	लाभ

अर्थव्यवस्था के क्षेत्र

- अर्थव्यवस्था के कुल पांच क्षेत्र माने जाते है लेकिन अर्थव्यवस्था में प्रत्यक्ष रूप से योगदान देने वाले क्षेत्र मात्र तीन ही होते है ।

1. प्राथमिक क्षेत्र :–

- इस क्षेत्र में प्राकृतिक संसाधनों की सहायता से आर्थिक कार्य किये जाते है सामान्यतः इस क्षेत्र में द्वितीयक क्षेत्र के लिए कच्चा माल तैयार किया जाता है । जैसे– कृषि, वन, मछली पालन आदि
- इसे कृषि क्षेत्र के नाम से भी जाना जाता है ।

2. द्वितीयक क्षेत्र :–

- निर्माण, विनिर्माण, उत्पादन आदि द्वितीयक क्षेत्र की गतिविधियाँ मानी जाती है ।
- इसे उद्योग क्षेत्र कहा जाता है ।
- खनन, उत्खनन, बिजली उत्पादन आदि भारत में द्वितीयक क्षेत्र में लिये जाते है ।

3. तृतीयक क्षेत्र :–

- इसे सेवा क्षेत्र भी कहा जाता है ।
- इस क्षेत्र में केवल सेवाएं शामिल की जाती है .। जैसे– डॉक्टर, वकील, इंजीनियर, सीए आदि ।

4. चतुर्थक क्षेत्र :–

- इस क्षेत्र में बौद्धिक सेवाएं शामिल की जाती है । जैसे– सांस्कृतिक सेवाएं, उच्च शिक्षा, अनुसंधान आदि

5. पंचम क्षेत्र :–

- उच्च स्तरीय राजनैतिक और आर्थिक निर्णय संबंधित सेवाएं इस क्षेत्र में शामिल की जाती है । जैसे– मंत्री, प्रधानमंत्री, कम्पनी के CEO आदि

क्षेत्र	GDP में योगदान	रोजगार में योगदान
कृषि	17%	50%
उद्योग	25%	25%
सेवा	$\frac{58}{100}$ %	$\frac{25}{100}$ %

अर्थव्यवस्था के क्षेत्र से सम्बन्धित अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

उद्योग क्षेत्र :-

- भारत की राष्ट्रीय आय का लगभग 25% भाग उद्योग क्षेत्र से आता है ।
- भारत की जनसंख्या का लगभग 25% भाग रोजगार के लिए उद्योगों पर निर्भर है ।
- उद्योगों को निम्न श्रेणी में बांटा जाता है-

(1) कुटीर उद्योग
(2) ग्रामीण उद्योग
(3) सूक्ष्म उद्योग
(4) लघू उद्योग
(5) मध्यम उद्योग
(6) वृहत् उद्योग

सूक्ष्म, लघू व मध्यम उद्योगों को MSME के नाम से जाना जाता है ।

1. पहली औद्योगिक नीति :-

- यह नीति 1948 में जारी की गई ।
- यह नीति डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी द्वारा जारी की गई ।
- इस नीति में मिश्रित अर्थव्यवस्था को अपनाया गया ।

(1) A श्रेणी
(2) B श्रेणी
(3) C श्रेणी
(4) D श्रेणी

2. दूसरी औद्योगिक नीति :-

- यह नीति 1956 में जारी की गई ।
- यह नीति पी. सी. महालनोबिस मॉडल पर आधारित थी ।
- इस नीति द्वारा भी मिश्रित अर्थव्यवस्था को अपनाया गया ।

3. तीसरी औद्योगिक नीति :-

- इसे डॉ. मनमोहन सिंह द्वारा जारी किया गया ।
- सरकार द्वारा केवल तीन उद्योग सार्वजनिक क्षेत्र के लिए रखे गये ।
  (1) परमाणु ऊर्जा (2) परमाणु खनिज (3) रेलवे
- शेष सभी उद्योग निजी क्षेत्र के लिए खोल दिये गये केवल संवेदनशील उद्योगों के लिए लाइसेंस की अनिवार्यता रखी गयी । उदा.- सिगरेट, बीडी, तम्बाकू, एल्कोहल, विस्फोटक आदि
- MRTP अधिनियम को समाप्त करके भारतीय प्रतिस्पर्धा लागू की गई ।
- भारत में विदेशी निवेश की अनुमति दी गई ।
- भारत में LPG सुधारों को अपनाया गया ।
- विद्यमान सार्वजनिक उद्योगों में निजीकरण के लिए विनिवेश को अपनाया गया ।

विनिवेश

- सरकार द्वारा किसी सार्वजनिक कंपनी में अपनी हिस्सेदारी बेचना या अपने समता अंशो को बेचना विनिवेश कहलाता है ।
- सामान्यतः निजीकरण को बढावा देने के लिए विनिवेश किया जाता है ।
- विनिवेश से सरकारी सम्पत्तियों से कमी आती है ।
- विनिवेश के कारण सरकार को गैर पूंजीगत प्राप्ति होती है ।

कृषि क्षेत्र

- ऐतिहासिक रूप से भारत एक कृषि प्रधान देश रहा है ।
- आजादी के बाद उद्योग और सेवा क्षेत्र में अत्यधिक तेजी से विकास हुआ । जबकि तुलनात्मक रूप से कृषि में उतनी तीव्रता से विकास नहीं हो पाया ।
- वर्तमान में राष्ट्रीय आय का लगभग 16 से 17% कृषि क्षेत्र से आता है जबकि आज भी भारत की आधी से अधिक आबादी रोजगार के लिए कृषि पर आधारित है ।

भारत में कृषि क्षेत्र की समस्याएँ :-

1. कृषि भूमि का आकार लगातार कम हो रहा है :-
2. भू-अभिलेखों में अस्पष्टता पाई जाती है :-
3. सिंचाई की समस्या कृषि भूमि का मात्र 35-36% भाग ही सिंचित है :-
4. प्रमाणित बीज का अभाव :-
5. उर्वरक :-

6. आधुनिक मशीनों का अभाव :-
7. वैज्ञानिक अनुसंधान :-
8. खाद्य प्रसंस्करण :-
9. कृषि विपणन :-
10. कृषि बीमा :-
11. वैज्ञानिक/तकनीकी सलाह का अभाव
12. कृषि वित्त की समस्या

राष्ट्रीय आय

- किसी देश में होने वाली सभी आर्थिक गतिविधियों का योग राष्ट्रीय आय कहलाता है अर्थात अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों की आय का योग राष्ट्रीय आय कहलाता है ।
- भारत में राष्ट्रीय आय की गणना CSO द्वारा की जाती है ।
- राष्ट्रीय आय के लिए आकडों का संकलन NSSO & CSO द्वारा किया जाता है ।
- यह दोनों संस्थाएँ MOSPI के अन्तर्गत कार्य करती है ।
  (1) MOSPI = Ministry of Statistics & Program Implementation (सांख्यिकी एवं कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय)
  NSSO = National Sample Survey
- NSSO ग्रामीण क्षेत्र, कृषि क्षेत्र और असंगठित क्षेत्र के आकडे एकत्रित करता है ।
- CSO संगठित क्षेत्र, उद्योग क्षेत्र, शहरी क्षेत्र आदि के आकडे एकत्रित करता है ।
- उपरोक्त के अतिरिक्त कर विभाग के आकडे जैसे- GST के आकडे भी लिये जाते है ।
- अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय आय की गणना करने के लिए तीन विधियों का उपयोग किया जाता है-
  (1) आय विधि
  (2) व्यय विधि
  (3) उत्पादन विधि
- भारत में मिश्रित विधि का उपयोग किया जाता है ।
- कृषि और उद्योग क्षेत्र के लिए उत्पादन विधि का उपयोग किया जाता है ।
- सेवा क्षेत्र के लिए आय विधि का प्रयोग किया जाता है ।
- भारत व्यय विधि का उपयोग नहीं करता है ।
- राष्ट्रीय आय की गणना चार मूल्यों पर आधारित होती है ।

(1) कारक लागत

(2) बाजार मूल्य- वह मूल्य जिस पर अंतिम उपभोक्ता द्वारा वस्तुएँ खरीदी जाती है । इसे वर्तमान मूल्य भी कहा जाता है ।

(3) आधार मूल्य-
- राष्ट्रीय आय की तुलना के लिए किसी एक वर्ष को आधार वर्ष माना जाता है ।
- भारत में 2011-12 को आधार वर्ष घोषित किया गया है ।
- किसी वस्तु का आधार वर्ष का मूल्य आधार मूल्य कहलाता है ।

(4) स्थिर मूल्य-
- यदि बाजार मूल्य में से मुद्रास्फीति का प्रभाव हटा दिया जाये तो वह स्थिर मूल्य कहलाता है ।
- राष्ट्रीय आय की गणना के लिए निम्न अवधारणाएँ प्रचलित है- GDP, GNP, NDP, NNP

सकल घरेलू उत्पाद **(GDP)** :- एक वित्त में किसी देश के निवासियों द्वारा देश की आर्थिक सीमा में उत्पादित अंतिम वस्तु और सेवाओं का मौद्रिक मूल्य GDP कहलाता है ।

वित्त वर्ष :-
- 1 अप्रैल से लेकर 31 मार्च तक 12 महीने की अवधि वित्त वर्ष कहलाती है ।
- वित्त वर्ष को परिवर्तित करने की संभावना ढूंढने के लिए निम्न कमेटियों का गठन किया गया
  (1) बेल्बी आयोग
  (2) L. K. JHA समिति
  (3) दार्निश वाचा समिति
  (4) शंकर आचार्य समिति (हाल ही में निर्मित)

अंतिम वस्तु एवं सेवा-
- उत्पादन प्रक्रिया से बाहर आने वाली वस्तुएं दो प्रकार की होती है ।

(1) मध्यस्थ वस्तुएं– ऐसी वस्तुएं जो किसी अन्य वस्तु के उत्पादन के लिए कच्चे माल के रूप में काम में ली जाती है, मध्यस्थ वस्तुएं कहलाती है। अर्थात यह वस्तुएं अंतिम उपभोक्ता द्वारा उपभोग में नहीं ली जाती जैसे– कार का इंजन

(2) अंतिम वस्तुएं – ऐसी वस्तुएं जिनका उपभोग अंतिम उपभोक्ता द्वारा किया जाता है अर्थात इनमें उत्पादन की प्रक्रिया पूर्ण हो चुकी होती है और उत्पादन संभव नहीं होता है । जैसे– कार

- दोहरी गणना से बचने के लिए मध्यस्थ वस्तुओं को छोड दिया जाता है और केवल अंतिम वस्तुओं को लिया जाता है ।
- भारत की GDP गणना अंतर्राष्ट्रीय प्रचलन के अनुरूप बनाने के लिए इसे GVA (सकल मूल्य संवर्द्धन) आधारित बनाया गया ।
  (1) GVA_{fc} = Rent + Interest + Wages + Profit
  (2) GVA_{bp} = GVA_{fc}+ उत्पादन कर – उत्पादन Subsidy
  (3) GDP_{mp} = GVA_{bp}+ उत्पाद कर – उत्पाद Subsidy
- वह मूल्य जिस पर सरकार द्वारा अंतिम उपभोक्ता से कर वसूले जाते है, आधार मूल्य कहलाता है ।

शुद्ध घरेलू उत्पाद (NDP) :-

- सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में से मूल्य ह्रास घटाकर इसकी गणना की जाती है।
- विभिन्न देशों में मूल्य ह्रास गणना अलग–अलग विधियों से की जाती है । इसलिए NDP का आधार प्रत्येक देश में समान नहीं होता ।
- इस कारण NDP का उपयोग घरेलू उद्देश्यों के लिए किया जाता है ।

NDP_{mp} = GDP_{mp} – Dep. (मूल्य ह्रास)

मूल्य ह्रास :– उत्पादन प्रक्रिया के दौरान, उत्पादन में प्रयोग में ली गई सम्पतियों व मशीनों में घिसावट होती है, इस कारण इनके मूल्य में आयी कमी मूल्य ह्रास कहलाती है ।

सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) :- एक वित्त वर्ष के दौरान देश के सभी नागरिकों द्वारा उत्पादित अंतिम वस्तुओं व सेवाओं का मौद्रिक मूल्य GNP कहलाता है ।

(1) GNP_{mp} = GDP_{mp} + Net factor Income from abroad (NFIFA)
(2) NFIFA = Income of Indian Citizen outside India – Income earned by foreigner in India

शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (NNP) :-

- इसकी गणना के लिए GNP में से मूल्य ह्रास को घटाया जाता है ।
- भारत में कारक लागत पर NNP को राष्ट्रीय आय माना जाता है ।
- बाजार मूल्य/वर्तमान मूल्य पर राष्ट्रीय आय को शुद्ध राष्ट्रीय आय (NNI) कहा जाता है ।
- NNP_{mp} = GNP_{mp} – Dep.(मूल्य ह्रास)
- NNP_{fc} = NNP_{mp} – अप्रत्यक्ष कर + सब्सिडी
- प्रति व्यक्ति आय = $\frac{\text{राष्ट्रीय आय}}{\text{जनसंख्या}}$ $\frac{NNP_{fc}}{\text{जनसंख्या}}$
- GDP_{cp} = GDP_{mp} – मुद्रास्फीति (CP = -स्थिर मूल्य)
- GDP_{cp} को वास्तविक GDP भी कहा जाता है ।
- बाजार मूल्य पर GDP को Nominal GDP भी कहा जाता है ।
- GDP Deflator = $\frac{\text{Nomial GDP}}{\text{Real GDP}} / \frac{\text{GDPmp}}{\text{GDPcp}}$

मुद्रास्फीति (Inflation)

- किसी देश/अर्थव्यवस्था में वस्तु और सेवाओं की कीमतें लगातार बढना मुद्रास्फीति कहलाता है ।
- मुद्रास्फीति के कारण, मुद्रा की क्रय शक्ति कम हो जाती है अर्थात महंगाई का बढना या रूपये के मूल्य में गिरावट मुद्रास्फीति कहलाता है ।

मुद्रा अवस्फीति (Deflation):–

- यदि अर्थव्यवस्था या देश में वस्तु या सेवाओं की कीमतें लगातार कम हो रही हो तो वह मुद्रा अवस्फीति कहलाती है ।

- मुद्रा अवस्फीति में मुद्रा की क्रय शक्ति बढ जाती है अर्थात वस्तुएं सस्ती होना या रूपये का मूल्य बढना मुद्रा अवस्फीति कहलाता है ।

Growth Flation :–

- किसी अर्थव्यवस्था के विकास के लिए मुद्रास्फीति को आवश्यक महत्वपूर्ण माना जाता है।
- महंगाई की अत्यधिक दर दीर्घकाल में अर्थव्यवस्था पर बुरा असर डालती है ।
- नियंत्रित मात्रा में मुद्रास्फीति की दर हासिल करना प्रत्येक देश का लक्ष्य होता है इसलिए इसे Targetting Inflation भी कहा जाता है ।
- विकसित देशों के लिए 1 - 2% तथा विकासशील देशों के लिए 4 - 5% मुद्रास्फीति अच्छी मानी जाती है ।

Dis-Inflation :– यदि समय के साथ वस्तु और सेवाओं की कीमतें बढ रही है । लेकिन मुद्रास्फीति की दर/गति कम हो रही हो तो यह Dis-inflation की परिस्थिति कहलाती है । अर्थात ऐसी परिस्थिति जिसमें मुद्रास्फीति घटती हुई दर से बढती है ।

Creeping Inflation :– यदि मुद्रास्फीति बढने की दर बहुत कम हो या बहुत धीमी हो तो वह Creeping Inflation कहलाती है । इस परिस्थिति में सामान्यतः मुद्रास्फीति की दर 1 अंक तक ही रहती है ।

Stag Flation :–

- यदि किसी देश में मुद्रास्फीति और बेरोजगारी दोनों समस्याएँ विद्यमान हो तो यह Stag Flation कहलाती है ।

फिलीप का सिद्धान्त :– फिलीप के अनुसार मुद्रास्फीति और बेरोजगारी में अल्पकाल में नकारात्मक या विपरीत संबंध होता है अर्थात यदि मुद्रास्फीति कम होती है तो बेरोजगारी बढ जाती है और मुद्रास्फीति बढने से बेरोजगारी कम हो जाती है ।

लागत जनित मुद्रास्फीति (Cost Push Inflation) :– यदि उत्पादन के कारकों की लागत बढने के कारण वस्तु और सेवाओं की कीमतें बढ जायेगी तो यह लागत जनित मुद्रास्फीति कहलाती है । जैसे– कच्चे माल की कीमतों में वृद्धि, मजदूरी दर में वृद्धि आदि

मांग जनित मुद्रास्फीति (Demand Pull Inflation) :– यदि वस्तुओं की मांग अत्यधिक बढ जाने के कारण वस्तु एवं सेवाओं की कीमतें बढ जाये तो यह मांग जनित मुद्रास्फीति कहलाती है ।

संरचनात्मक मुद्रास्फीति :–

- यदि वस्तुओं की मांग और लागत में कोई परिवर्तन ना हो लेकिन वस्तुओं की आपूर्ति बाधित होने के कारण वस्तुओं की कीमतें बढ जायें तो वह संरचनात्मक मुद्रास्फीति कहलाती है ।
- आपूर्ति बाधित होने का कारण उत्पादक या विक्रेता/आपूर्तिकर्ता संस्थान में संरचनात्मक कमजोरी को माना जाता है ।
- जैसे– 1. समय पर कच्चा माल उपलब्ध न होना ।
  2. उत्पादन प्रक्रिया में विलम्ब ।
  3. यातायात साधनों की अनुचित व्यवस्था आदि
- इसे Bottle Neck मुद्रास्फीति भी कहा जाता है ।

मुख्य मुद्रास्फीति (Core-Inflation) :–

- यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण महंगाई मानी जाती है यदि महंगाई की गणना करते समय खाद्य पदार्थों और बिजली/ऊर्जा की कीमतों में होने वाले परिवर्तन को सम्मिलित नहीं किया जाये तो इस प्रकार ज्ञात मुद्रास्फीति Core Inflation कहलाती है ।

तिरछी मुद्रास्फीति (Skew-flation) :–

- मुद्रास्फीति की दशा में सामान्यतः सभी वस्तुओं की कीमतों में परिवर्तन आता है । यदि अन्य वस्तुओं की कीमतों में सामान्य परिवर्तन हो लेकिन किसी विशेष वस्तु या वस्तुओं के छोटे समूह में अत्यधिक परिवर्तन आये तो वह Skew flation कहलाता है ।

- सामान्यतः मुद्रास्फीति की गणना के लिए पिछले वर्ष की कीमतों का प्रयोग किया जाता है । गणितीय प्रभाव के कारण मुद्रास्फीति की दर घटती हुई नजर आती है । यदि मुद्रास्फीति दर की गणना आधार वर्ष के मूल्यों का उपयोग करके की जाये तो वास्तव में

मुद्रास्फीति अत्यधिक बढ चुकी होती है । अतः इसे आधार वर्ष प्रभाव कहा जाता है ।

- भारत में 2011–12 को आधार वर्ष माना जाता है ।

<u>मुद्रास्फीति का मापन</u> :– मुद्रास्फीति के मापन के लिए दो मूल्यों का प्रयोग किया जाता है ।

(1) <u>थोक मूल्य :–</u> जिस मूल्य पर व्यापारियों या विक्रेता द्वारा थोक बाजारों में बडी मात्रा में वस्तुएं खरीदी जाती है, थोक मूल्य कहलाता है ।

(2) <u>उपभोक्ता मूल्य :–</u> वह मूल्य जिस पर अंतिम उपभोक्ता द्वारा छोटी मात्राओं में खुदरा बाजार में वस्तुएं खरीदी जाती है, उपभोक्ता मूल्य कहलाता है ।

<u>थोक मूल्य सूचकांक (WPI)</u> :–

- यह सूचकांक थोक मूल्यों पर आधारित है ।
- 2014 तक भारत में इसे मुद्रास्फीति के मापन में प्रयोग में लाया जाता है ।
- यह सूचकांक उद्योग व वाणिज्य मंत्रालय द्वारा जारी किया जाता है ।
- WPI केवल वस्तुओं पर आधारित होता है ।
- निम्न प्रकार के WPI घोषित किये जाते है ।

(1) <u>प्राथमिक वस्तुओं का WPI</u> :– इसमें खाद्य पदार्थो को शामिल किया जाता है । इसमें 117 वस्तुएँ शामिल है ।

(2) <u>ईंधन का WPI</u> :– इसमें 16 वस्तुएँ शामिल की जाती है ।

(3) <u>विनिर्मित वस्तुओं का WPI</u> :– इसमें 564 विनिर्मित वस्तुएँ शामिल की जाती है ।

(4) <u>मुख्य WPI</u> :– उपरोक्त सभी को सम्मिलित करते हुए मुख्य WPI ज्ञात किया जाता है ।

- इसमें 697 वस्तुएं शामिल की जाती है ।
- WPI की घोषणा प्रत्येक महीने की 14 तारीख को की जाती है ।
- WPI का वर्तमान आधार वर्ष 2011–12 है ।

<u>उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI)</u> :–

- यह उपभोक्ता मूल्यों पर आधारित सूचकांक है ।
- 2014 ई. में इसे भारत का मुख्य सूचकांक घोषित किया गया ।
- वर्तमान में RBI द्वारा मौद्रिक नीति निर्धारण के लिए CPI का उपयोग किया जाता है ।
- CPI में वस्तुओं के साथ सेवाओं में होने वाले परिवर्तन को भी शामिल किया जाता है ।
- इसकी घोषणा MOSPI, CSO (Central Statistics Office) द्वारा की जाती है ।
- इसकी गणना हेतु वस्तु एवं सेवाओं के समूह को आधार बनाया जाता है ।
- इसे वस्तु और सेवाओं की Basket कहा जाता है ।
- ग्रामीण क्षेत्र की Basket में 448 व शहरी क्षेत्र की Basket में 960 वस्तु और सेवाएँ शामिल की जाती है ।
- ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के लिए अलग–अलग CPI ज्ञात किया जाता है ।
- इनके आधार पर एक सामूहिक CPI घोषित किया जाता है ।
- CPI की घोषणा प्रत्येक महीने की 11 तारीख को की जाती है ।
- CPI में खाद्य पदार्थो की 60% भागांश दिया जाता है
- श्रम और रोजगार मंत्रालय द्वारा श्रम आधारित CPI की घोषणा की जाती है । जैसे– औद्योगिक श्रम का CPI
- CPI के आधार पर सरकारी कर्मचारियों का महंगाई भत्ता व मनरेगा मजदूरी आदि ज्ञात की जाती है ।
- विश्व के लगभग 157 देशों में इसे अपनाया जाता है
- इसका आधार वर्ष 2012 ई. है ।

<u>Participatory Note (P. Note)</u> :–

- विदेशी निवेशकों द्वारा भारतीय शेयर बाजार में खरीदे गये शेयरों के आधार पर भारत से बाहर जारी की गई प्रतिभूतियाँ P. Note कहलाती है ।
- P. Note पर सरकार और SEBI का नियंत्रण बहुत कम होता है ।
- Hedge शब्द से अभिप्राय संभावित जोखिम से सुरक्षा से है । Hedge Fund निवेशकों से धनराशि एकत्रित करके उन्हें जोखिम भरे क्षेत्रों में निवेश करता है ।
- संभावित जोखिम से बचने के लिए Hedge Fund विभिन्न प्रकार के तकनीकों का प्रयोग करता है । उदा.– Short Selling, Arbitrage etc